दीवाना
अंक : ११ वर्ष : १७ १ जून १९८१
मुफ्त पोस्टर
*
कमलाहसन
१.५० रुपये
वन महोत्सव

लल्लू
लल्लू, तुम कहते हो कि तुम स्कूल या कॉलिज में नहीं पढ़ते। तुम्हारे मां बाप पुराने ख्यालों के हैं?
वास्तव में मेरे मां बाप हैं। सच तो यह है ज़रूरत से ज्यादा

लल्लू के डैडी, कुछ ख्याल है लल्लू तीन साल का हो गया है, अब उसे किसी अच्छे किंडर-गार्टेन में दाखिल करवा देना चाहिये।
किंडरगार्टेन? हरगिज नहीं। लल्लू एक बच्चे की तरह शिक्षा पायेगा। कोई बाजी नहीं होगी।
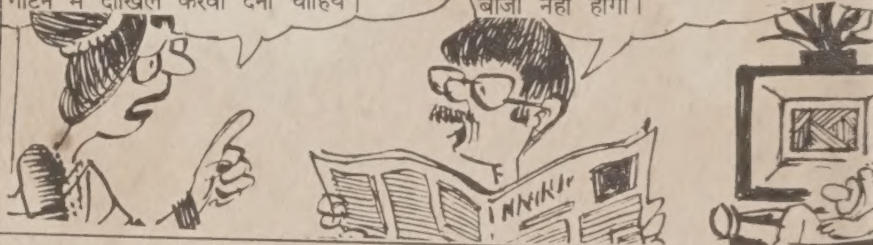
मैं कहती हूं लल्लू इंगलिश मीडियम स्कूल में पढ़ेगा।
नहीं।
कान खोल कर सुनो, लल्लू सरकारी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करेगा।
नहीं की ऐसी तैसी
चलो इसका फैसला लल्लू पर छोड़ उसी से पूछते

लेकिन लल्लू अभी बच्चा है। वह सोचने समझने लायक नहीं है।
कोई बात नहीं, हम इंतजार करेंगे।
लल्लू बेटे, इधर आओ, बैठो। अब तुम २० वर्ष के हो गये हो अपना भला बुरा समझ सकते हो।
हम यह पूछना हैं कि तुम में जाना चाहते हो
मुझे मां बाप भी लल्लू ही मिले?

कुछ नयी
अनपेटेन्ट दवाइयां
चवनप्राश
जिन लीडरों की हालत पतली है उन्हें मोटा करने वाला टॉनिक
CONGRESS
(I)ODEX
नाकामी की चोटों को आराम देने वाला मल्हम
रमण का
बॉडएड
काला धन कमाते हुये चोट लग जाने पर लगाने के लिये
बाल जगजीवन घुट्टी
बूढ़े नेताओं के लिये घुट्टी
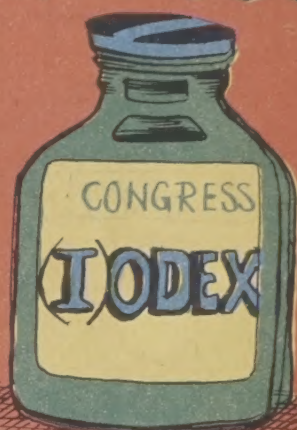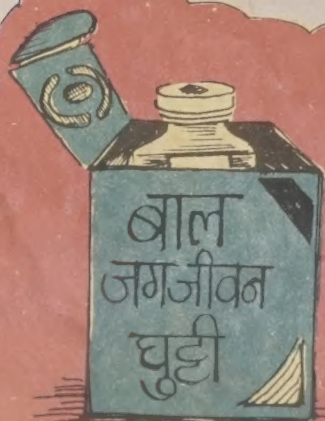
अंक ११ वर्ष १७ १ जून १९८९

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

चिल्ली को जब लगा पता
जन-संख्या बढ़ती जाती है
महंगाई सबको रही सता,
रोटी भी कम पड़ जाती है,
यही एक रह गया इलाज,
सर पर भी अब उगे अनाज,
मुश्किल से हल निकाला है,
चिल्ली का बोल बाला है।

आगामी अंक में

★
छाते-नये निराले
★
बादल विचार
★
दीवाना कार्ड
★
मुफ्त पोस्टर
ब्रूसली

दीवाना का अंक ५ प्राप्त हुआ। नामी चोर, सवाल यह है, सिलबिल पिलपिल ने बहुत हँसाया। दूसरे फीचर मोटू पतलू, पंचतन्त्र, आदिमानव, मदहोश तथा बन्द करो बकवास आदि रोचक थे। जीनत अमान का पोस्टर बहुत अच्छा लगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप दीवाना में विश्वनाथ का पोस्टर अवश्य दें।

इसी अंक में प्रकाशित हास्य कथा कैप्टन लाला बहुत मनोरंजक थी। कृपया मोटू पतलू की कोई जासूसी कहानी छापने की कृपा करें।

संजय गर्ग—पटियाला।

दीवाना अंक ८ मिला
मुख्य पृष्ठ मजेदार,
मोटू पतलू दिल बहार,
फैन्टम जानदार,
सिलबिल पिलपिल वफादार,
हाय हाय यूनियन रोबदार,
और दीवाना शानदार,
दीवाना के सम्पादक को,
मेरा नमस्कार।

प्रेमराज राजू—मुरादाबाद।

दीवाना मेरी प्रिय वस्तु है। दीवाना पाकर हँसते-हँसते मेरे पेट में दर्द हो जाता है और फिर मुझे पेट दर्द की गोलियाँ लानी पड़ती हैं। इस प्रकार दीवाना मुझे २ रु० का पड़ता है। कृपया दीवाने के साथ-साथ पेट दर्द रोकने की पुड़िया भी भेजा करो।

दीवाना के सभी स्तम्भ अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक हैं, शुभ कामनाओं सहित।

धर्मवीर अरोड़ा—रेवाड़ी।

हिम्मतसिंह सोलंकी, धर्मपुरी घाट (म०प्र०)

प्र०: कपड़े को मीटर से नापते हैं, दूरी को किलोमीटर से तो प्यार को?

उ०: पैमाना है प्रेम का, सुन लो बरखुरदार।
नयनों से नैना मिलें, नप जाता है प्यार।।

रवींद्रनाथ, सुरींद्रनाथ (लुधियाना)

प्र०: भ्रष्टाचारी की नाव कब डूबने लगती है?

उ०: मंत्री जी से जिस समय, हो जाए खटपट्ट।
चट्टपट्ट छापा पड़े, नौका डूबे झट्ट।।

किशोर कुमार, सब्जी मंडी (दिल्ली)

प्र०: सरकार ने दस हज़ार वाले 'धारक बॉंड' निकाले हैं, इस पर आपकी प्रतिक्रिया?

उ०: काला धन निकालो सब, जमीन के तल्ले से।
मूछों पर ताव देकर, घूमो धड़ल्ले से।।

दीपक शर्मा, घास मंडी—काशीपुर

प्र०: मेरा मन अब इस दुनिया से ऊब गया है, कहां जाऊं?

उ०: युग है यह 'विज्ञान का, काहे मन पछताय।
चले जाइए चांद पर, मूड चेन्ज हो जाय।।

बशीर अहमद आदिल, समस्तीपुर

प्र०: कोई हसीना हमसे वादा करके दूसरे से लव करने लगे तो?

उ०: गई और के पास तो तुम क्यों करो प्रलाप?
कोई दूजी प्रेमिका, पटालेउ चुपचाप।

महेश कुमार मेथानी—रामपुर।

प्र०: प्रश्नों के उत्तर, आप लिखते हैं या काकी?

उ०: दीवानों के प्रश्न पढ़, काकी मारे सैन।
उत्तर मिले दिमाग से, लिखने लगता पैन।।

कु० रानी गुलानी, बैरागढ़ (म०प्र०)

प्र०: कोई मेरी ओर देखता है, तो मुझे गुस्सा क्यों आ जाता है?

उ०: जो देखे शुभ दृष्टि से, उसका आशिष लेउ।
बुरी नजर से जो तके, उसमें चप्पल देउ।।

एम० ए० गुजराल, मॉडल टाउन, करनाल

प्र०: उनके ख्याल आये, तो आते चले गये।
वे जब कभी आये तो बलखाते चले गये।।

उ०: झूठन है आशिकों की, रूठन बला की है।
रस्सी तमाम जल चुकी, ऐंठन बला की है।।

ब्रजमोहन चौपड़ा, कालका (हरियाणा)।

प्र०: जब कोई बदसूरत चीज आप देखते हैं तो क्या प्रतिक्रिया होती है?

उ०: बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जब दिल खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय।।

मुन्ना बाबू खलैया—कानपुर।

प्र०: काकाजी, सुना है, 'दीवाना' का 'मदहोश' आपका सगा भतीजा है?

उ०: रखते हैं समभावना नहीं खुशी ना रोष।
सब हैं अपने भतीजे, मुन्ना या मदहोश।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.

अ. हा...!
मीठी-मीठी
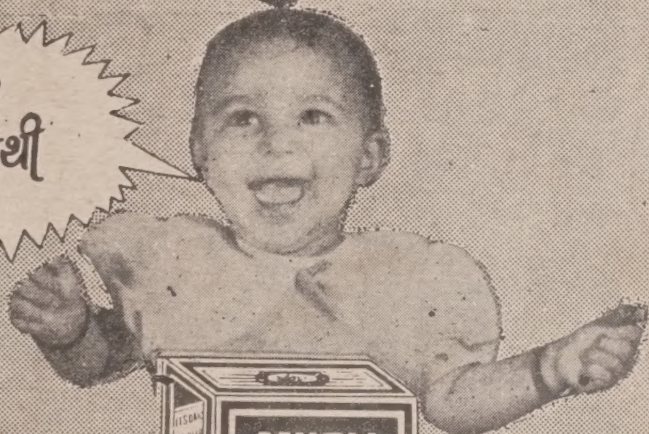
पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए

अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....

श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032
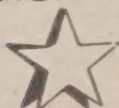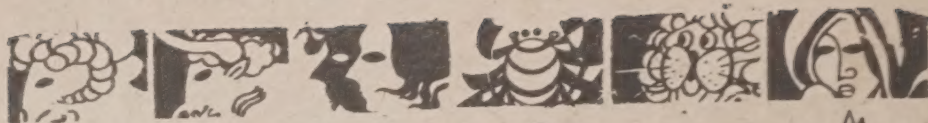
आपका भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा
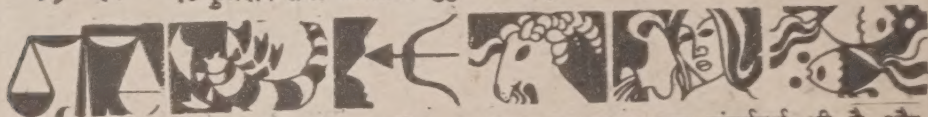
मेष : यह सप्ताह आपके लिए पर्याप्त अच्छा है, किसी विशेष काम के पूरा होने की खुशी होगी, परिश्रम द्वारा रुके एवं अभीष्ट कार्य भी सिद्ध किए जा सकते हैं, कारोबार में उन्नति, लाभ भी बढ़ेगा।

वृष : इन दिनों संघर्ष तो काफी करना पड़ेगा लेकिन आपकी योजनाओं में सफलता मिलती रहेगी, नए काम से लाभ होगा, स्थायी कामधन्धों में भी सुधार एवं लाभ के अवसर मिलेंगे, आय यथार्थ होगी।

मिथुन : यह सप्ताह तकरीबन अच्छा है, विगत समय में नए कामों के सुपरिणाम अब मिलने लगेंगे, जो हानियां या बाधाएं पैदा हो गई थीं अब दूर होती जाएंगी, लाभ के नए साधन भी जुटेंगे।

कर्क : सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं पैदा होंगी, सुस्ती या कमज़ोरी आदि का प्रभाव रहेगा फिर भी हालात पहले से ठीक चलते महसूस होंगे, स्थायी कामधन्धों में सुधार एवं लाभ भी बढ़ेगा।

सिंह : विगत दिनों की तुलना में यह सप्ताह अच्छा रहेगा, परन्तु ध्यान रखें कि क्रोधवश जल्दबाज़ी में भी काम न करें वर्ना हानि हो सकती है, प्रयास करने पर विशेष काम बन जाएंगे, कारोबार में भी सुधार होगा।

कन्या : आर्थिक समस्या दूर होती महसूस होगी और हालात भी पहले से साज़गार चलने लगेंगे, आय का कोई नया साधन बनेगा या वृद्धि होगी, शत्रु सामना न कर पाएंगे, परिवार से सुख सहयोग।

तुला : यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी, चल रहे कामों में सुधार एवं उन्नति तो होगी परन्तु धन प्राप्ति में कुछ बाधाएं पड़ेंगी या खर्च काफी होता रहेगा, आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण बना रहेगा।

वृश्चिक : यह सप्ताह पहले से कहीं अधिक अच्छा रहेगा, किसी विशेष समस्या से छुटकारा मिलेगा, कोई अधूरा या बिगड़ा काम चल पड़ेगा, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, यात्रा की आशा है।

धनु : सफलता प्राप्त करने के लिए इन दिनों कठोर परिश्रम करना पड़ेगा, मानसिक परेशानी एवं घरेलू समस्याएं परेशान करेंगी, कारोबार में कुछ अड़चन फिर भी लाभ अच्छा होता रहेगा।

मकर : नए काम से लाभ की आशा है सप्ताह पहले से अच्छा है, सरकारी कामों में भागदौड़ करने पर सफलता मिल जाएगी, सेहत की ओर विशेष ध्यान दें, सोशल कामों में रुचि रहेगी।

कुम्भ : कुछ समस्याओं से छुटकारा मिल जाएगा, कामकाज की स्थिति में सुधार करना पड़ेगा या स्वतः हो जाएगा, लाभ बढ़ेगा, अच्छे लोगों के परामर्श से काम बनेंगे, शत्रु पर विजय, रुकावटें दूर होंगी।

मीन : सावधानी से रहें, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, व्यय बढ़ेगा, अन्य दिनों में भाग्य आपका साथ देगा और आप किसी भारी मुसीबत में पड़ने से बच जाएंगे, कोई आरोप लगने का अन्देशा है।

लोमड़ी और रीछ

श्री कृष्ण

एक बार चटपट लोमड़ी की शहद खाने की इच्छा हुई। वह गोश्त खाते-खाते थक गई थी और कोई मीठी चीज़ खाने की उसकी बड़ी इच्छा हो रही थी।

'चलूं, मधुमक्खियों के छत्ते से थोड़ा सा शहद ले कर आऊं . . .' उसने अपने मन में सोचा और बाग़ में पहुंचकर शहद के छत्ते के बाहर चुपचाप बैठ गई। धीरे धीरे उसने शहद खुरचने के लिए अपने पंजे छत्ते में डाल दिये। पंजों का छत्ते में डालना था कि मक्खियां भिनभिनाती हुई एकदम छत्ते से बाहर निकल पड़ीं और सब-की-सब चटपट लोमड़ी से चिपट गईं। अब तो चटपट लोमड़ी सिर पर पांव रखकर भागी और नाक सिकोड़कर बोली—

"शहद तो मीठा है लेकिन मक्खियां कड़वी हैं।"

लोमड़ी अपनी झोंपड़ी में आकर धम्म से पड़ गई। उसकी नाक सूज गई थी और फूलकर कुप्पा हो गई थी। वह बहुत देर तक लेटी-लेटी सोचती रही पर शहद की बात अपने दिमाग से न निकाल सकी।

'चलूं, झबरूमल रीछ से मिलूं। उसने सोचा, 'और उनसे कहूं कि मै तुम्हारे घर में रहना चाहती हूं। सुना है झबरूमल शहद के बहुत शौकीन हैं। उनके घर मुझे ज़रूर शहद मिलेगा।'

लोमड़ी झबरूमल रीछ के पास पहुंची।

"राम-राम, झबरूमलजी!" लोमड़ी ने कहा, "कैसे हो?"

"अरे, चटपट, तुम! तुम! बहुत दिनों में दिखाई दीं। क्या कहीं बाहर गई थीं?" झबरूमल ने पूछा।

"क्या बताऊं, झबरूमलजी! जब से तुम्हारे भैया मरे है, मेरा तो सब सुख-चैन जाता रहा है। अकेला घर फाड़ खाने को आता है।"

"अरे तो, चटपट, मेरे घर चली आओ न। अकेले रहते-रहते मै भी ऊब गया हूं। एक से दो भले। जिन्दगी मज़े से गुज़रेगी।"

लोमड़ी तो यह चाहती ही थी। बोली, "हां, सोचती तो मैं भी यही हूं।"

और वे दोनों मिलकर गृहस्थी चलाने लगे। झबरूमल नित्य शिकार के लिए जाता और अपने और चटपट लोमड़ी के लिए काफी मात्रा में गोश्त लेकर लौटता। लेकिन चटपट लोमड़ी की शहद खाने की इच्छा अभी भी वैसी-की-वैसी ही बनी थी।

एक दिन लोमड़ी ने रीछ से कहा, "झबरूमलजी, किसी दिन मेरे लिए थोड़ा सा शहद तो लाओ। मुझे मीठी चीज़ खाने की बहुत इच्छा हो रही है।" कहने की देर थी, अगले ही दिन झबरूमल रीछ शहद के भरे हुए दो छत्ते ले आया और बोला, "एक छत्ता तो जाड़ों के लिए उठाकर रख देता हूं। दूसरा अभी निपटाये देते हैं।"

और उन्होंने जी भरकर शहद खाया। कुछ दिनों में पहले छत्ते का शहद खत्म हो गया। झबरूमल ने दूसरे छत्ते को ले जाकर छत पर छिपा दिया।

झबरूमल तो सन्तोषी जीव था। पर चटपट को यही सूझ रही थी कि किसी तरह बचे हुए शहद पर हाथ साफ करें। छत पर किस बहाने से जाए? उसे डर था कि कहीं झबरूमल को शक न पड़ जाय और वह यह न पूछ बैठे कि छत पर क्या करने गई थी। वह खाट पर लेट गई और अपनी पूंछ से दीवार पर ठक-ठक करने लगी।

"यह कैसी खटखट है?" झबरूमल रीछ ने पूछा।

"पड़ोसी के लड़का हुआ है। वे मुझे बुला रहे हैं।" लोमड़ी ने झूठ बोला। वह दौड़ी-दौड़ी छत पर गई और पेट भर शहद खाकर लौट आयी। झबरूमल ने पूछा,

"पड़ोसियों ने बच्चे का क्या नाम रखा ?"

"कम-कम-खुरचा।" चटपट लोमड़ी बोली।

"बड़ा अजीब नाम है!"

"इसमें अजीब की क्या बात है! अपनी-अपनी पसन्द है।"

अगले दिन चटपट लोमड़ी फिर खाट पर लेटकर दीवार से पूंछ बजा-बजाकर ठक-ठक करने लगी।

"यह कौन ठक-ठक कर रहा है ?" झबरूमल ने पूछा।

"पड़ोसी मुझे बुला रहे है। उनके लड़की हुई है।"

आज भी चटपट लोमड़ी भागी हुई छत पर गई और जी भरकर शहद पर हाथ साफ किया, यहां तक कि छत्ते में कुछ ही शहद बच रहा।

जब लोमड़ी वापिस आयी तो झबरूमल ने पूछा, "क्यों जी, पड़ोसियों ने लड़की का क्या नाम रखा ?"

"कम बचा।" चटपट लोमड़ी ने उत्तर दिया।

"बड़ा अजीब नाम है!"

"अजीब तो नहीं है। मै तो समझती हूं बड़ा अच्छा नाम है।"

तीसरे दिन फिर चटपट लोमड़ी ने दीवार से पूंछ बजानी शुरू कर दी।

"आज फिर कोई ठक-ठक कर रहा है।" झबरूमल रीछ ने कहा।

"पड़ोसी हैं। उनके एक और लड़की हुई है।"

"वे तुम्हें ही क्यों बुलाते हैं?" झबरूमल ने पूछा।

"उन्हें मेरा साथ बहुत पसन्द है, यही कारण है।" लोमड़ी ने कहा और भागी हुई छत पर पहुची। उसने सब शहद चाट लिया और छत्ते को फेंककर फिर झोंपड़ी में आकर अपने बिस्तर पर लेट गई।

"क्यों, पड़ोसियों ने इस लड़की का क्या नाम रखा है?" झबरूमल रीछ ने कहा।

"सफाचट।" चटपट लोमड़ी ने उत्तर दिया।

"सफाचट भी कोई नाम है? मैंने तो कभी नहीं सुना।"

"तुम्हें क्या पता! ऐसा नाम भी ज़रूर होता होगा, नहीं तो उनका क्या सिर फिर रहा था जो लड़की का यह नाम रखा।"

थोड़ी देर बाद झबरूमल रीछ को शहद खाने की इच्छा हुई। उसने छत पर जाकर देखा तो छत्ते का कहीं पता नहीं था।

"अरे, शहद कहां गया? क्यों री चटपट, तू सारा शहद चट कर गई।" झबरूमल छत पर से ही चिल्लाया, "ठहर, अब मै तुझे चट करूंगा!"

और झबरूमल रीछ चटपट लोमड़ी के पीछे भागा। लेकिन चटपट लोमड़ी दौड़कर झाड़ियों में जा छिपी और फिर कभी दिखाई नहीं दी।

मोटू पतलू और बंगाल का काला

पिछले दिनों मोटू-पतलू को अपनी लाइब्रेरी में से पुरानी जादू की पुस्तकें हाथ आ गईं। और उन्होंने जादू के खेल सीखने और इस आर्ट में अपना कमाल दिखाने का प्रोग्राम बना लिया। उन के विचार में यह काम इतना कठिन भी नहीं था। बस कुछ हाथ की सफ़ाई चाहिये, कुछ प्रैक्टिस और ऐसी विलपावर कि देखने वाले जादूगर की हर बात को सही मानते चले जायें।

इसके लिये उन्होंने जादू के खेल सिखाने वाली पुस्तकों को ध्यान से पढ़ा। उन की हर बारीक़ी पर विचार किया। उन में लिखी बातों के अनुसार खेल दिखाने का सामान ख़रीदा और शो दिखाने की प्रैक्टिस शुरू कर दी।

इस प्रकार कुछ दिनों बाद वे अपने को चोटी का जादूगर समझने लगे। अपने खेल का पहला शो दिखाने के लिये उन्होंने अपने पड़ोसियों और मित्रों को अपने घर बुलाया। पतलू ने ऊंचे स्वर में बिगुल बजाया। और उन्होंने अपना जादू का शो शुरू कर दिया।

और सच पूछिये तो यह नोट भी जल कर कोयला हुआ है न राख। यह ज्यूं का त्यूं घसीटा राम की जेब में पहुंच गया है।

क्या कर रहे हो, मेरी जेब में घुसपैठ क्यों कर रहे हो?
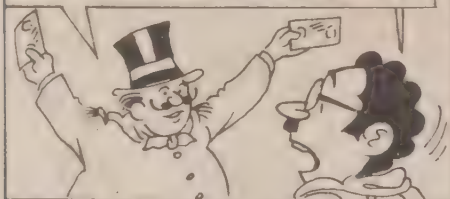
हर जादू फ़ेल हो रहा है। जैसा किताब में लिखा है, क्या वैसा नहीं कर रहा है तू?

कोई बात नहीं। ज़रा गड़बड़ हो गई। अब अगला खेल देखिये मेहरबान। ज़रा ज़ोर से बिगुल बजा पतलू !

अब देखिये, अपनी आँखों पर पट्टी बांध कर मैं किस खूबसूरती से इस तीर से गूंधता हूं।

अपनी आंखों की बजाये मेरी आँखों पर पट्टी बांध दे। ताकि तेरे तीर से चाहे जान निकल जाये, पर डर के मारे न निकले।

मोटू ने तीर चलाया तो तीर के बजाये कमान चल गई और उसने मोटू का कबाड़ा कर दिया।

सेब उसके सर पर रखा है या तेरी नाक पर ? इतनी प्रेक्टिस की पर खेल एक भी ठीक तरह दिखाना नहीं आया।
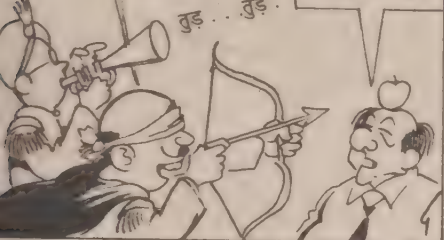
अब देखिये मेहरबान। बीस साल तक जंगली बन्दरों के साथ रहने वाला यह जूडो मास्टर लोहे का एक गोला सटकेगा और मैं इसके मुंह में से बीस गोले निकालूंगा।
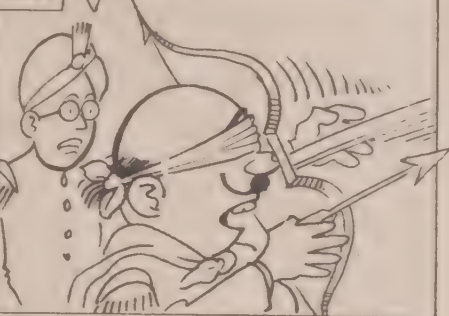
सटक जा प्यारे सटक जा। ग़म न कर। एक गोले के बीस गोले निकालना मेरा काम है।

सटक गया ! वाह मेरे शेर के बच्चे ! ! कमाल कर दिया। निकाल अब इस गोले को बाहर। फिर मैं तेरे मुंह से उन्नीस और गोले निकालने की हाथ की सफ़ाई दिखाऊंगा।

गोला इतना बड़ा था कि किसी तरह जूडो मास्टर के मुंह में चला गया, पर अब दाँतों के बीच ऐसा फंसा था कि निकलने का नाम नहीं ले रहा था।

अरे यह गोला है या पाकिस्तानी फौज़, जो एक बार कशमीर में घुसी तो फिर निकलने का नाम नहीं लिया।

कितनी ढीट है यह गोला। कराटे का धक्का खा कर भी नहीं निकल रहा है।
अरे मैं मरा। मेरा दम घुटा।
अरे मुझे निकालने दो यह गोला। तुम तो इसकी जान ही निकाल दोगे।
डाक्टर झटका ने गोले में जम्बूर फंसा कर एक झटका मारा तो गोले के साथ जूडो मास्टर की बत्तीसी भी बाहर आ गई।
अब
बाकी
उन्नी
निकाल
बाकी उन्नीस से अपना सर फोड़ लो और मेरी जान छोड़ो।
अगर जादू के खेलों में सफलता चाहते हो तो मेरा कहना मानो और मेरी सहायता से खेल दिखाओ।
चेला राम की योजना कमाल की थी। उसकी सहायत से अब मोटू-पतलू नया खेल दिखाने के लिये तैयार गये थे। परदा गिराकर उन्होंने परदे के पीछे खेल पूरी तैयारी की। और फिर पर्दा उठा दिया।
हां तो मेहरबानों, कदरदानों, जादू के दीवानो। हमारा नया खेल देखो।
मैं बक्स में लेटे चेला राम को आरी से बीचोंबीच काट दूंगा
अरे मार दोगे तुम इस लड़के को बे-मौत। कहीं भरोसे पर तो इसके टुकड़े नहीं कर हो कि बाद में मैं इसकी लाश को मो के सूई धागे से सी दूंगा।

यह है बंगाल का काला जादू जिसे देखने वालों ने बारम्बार तालियां पीटी हैं।
अब तुम्हारा सर और अपनी छातियां पीटनी बाक़ी हैं।
काली-काली महा काली कलकत्ते वाली, तेरा वचन कभी न जाये खाली। मैंने अपनी बात बना ली, जो देता देने दो गाली।
अरे क्या कर रहे हो ? ? दो टुकड़े हो जायेंगे छोकरे के।
हो भी गये दो टुकड़े, अब क्या रखा है। बोल सिया पति राम चन्द्र की जय।
काट दिया गाजर मूली की तरह। बेचारे के मुंह से एक सिस्की तक नहीं निकली।
चलो, अब पर्दा गिरा दो।
र्दे के पीछे।
मैं और मेरा दोस्त चेला राम बक्स के आधे-आधे हिस्से में फिट हो गये थे। और तुम ने बीच में से काट दिया जहां कुछ नहीं था। कहो, कैसा रहा जादू?
र्दे के बाहर लोग यह सोच कर दहाड़ें मार रहे हैं कि म ने तुम्हें बीच में से काट दया है।
चलो पर्दा उठा कर उन्हें कटा हुआ चेला राम दिखा दो।
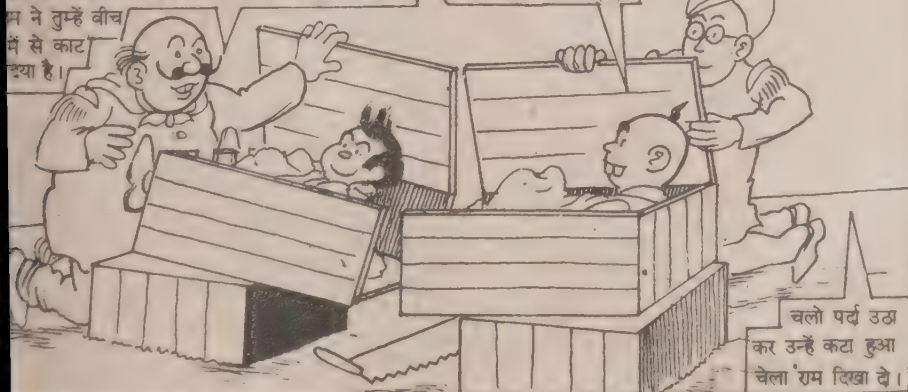
देखिये साहेबान। यह रहे चेला राम के कटे हुये दो हिस्से, लहू की एक बूंद नहीं गिरी और चेला राम जिन्दा है।
हां मैं बिल्कुल सही सलामत हूं।
कमाल हो गया।
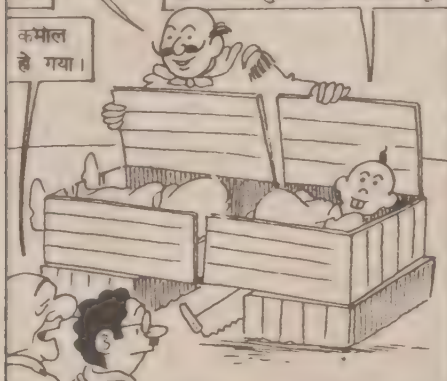
अब देखो बंगाल का सरफिरा जादू। घसीटा राम इस टोकरे में बंद होगा। और हम इस में तलवारें घुसायेंगे।
मेरा पेट फाड़ेंगे तलवारों से।
चेला राम का पेट फटा है, जो तुम्हारा फटेगा ?

चेला राम को हमने सौ रुपये दिये हैं, तुम्हें इस खेल के दो सौ रुपये देंगे।
दो सौ रुपये ! चेला राम का कुछ नहीं बिगड़ा तो मेरा भी नहीं बिगड़ेगा ? मंजूर है।
तो बैठो इस टोकरे में।
हे काली महाकाली,
तू मेरी करना रखवाली।
कोई नहीं मुझे रोने वाला,
न मुझको कोई रोने वाली।
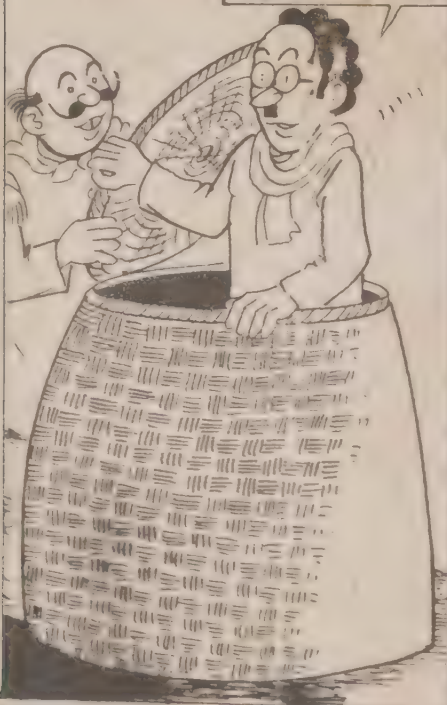
देखिये साहेबान, यह मैं ने तलवार की चोंच टोकरे में घुमाई
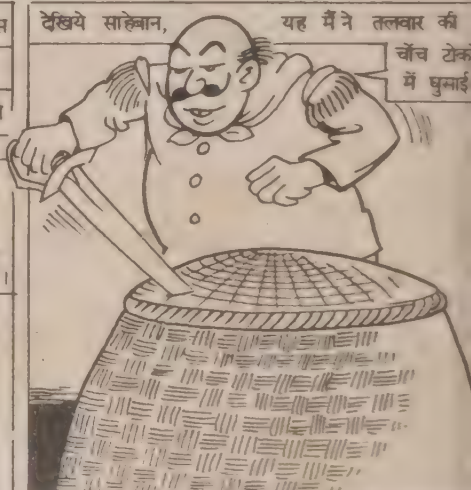
हां घुमाई। सीधी मेरे पेट की तरफ़ आ रही है।

और एक झटके में
यह गई अंदर।
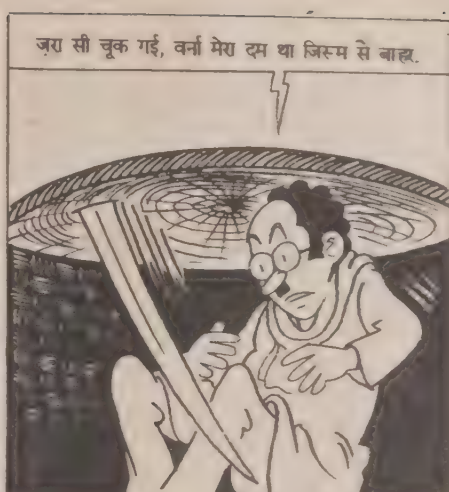
ज़रा सी चूक गई, वर्ना मेरा दम था जिस्म से बाहर.

यह दूसरी
तलवार
टोकरे में
घुसाई।
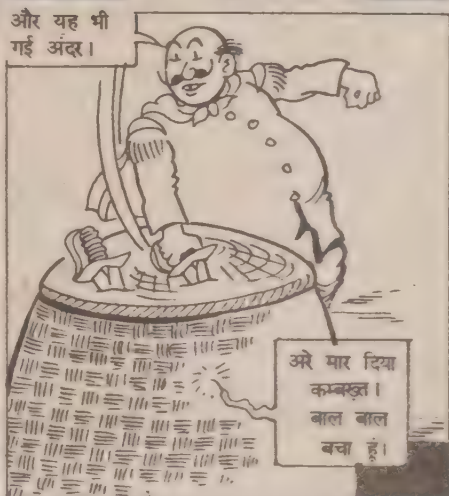
और यह भी
गई अंदर।
अरे मार दिया
कम्बख़्त।
बाल बाल
बचा हूं।

यह गई तीसरी तलवार पूरी की पूरी अन्दर।
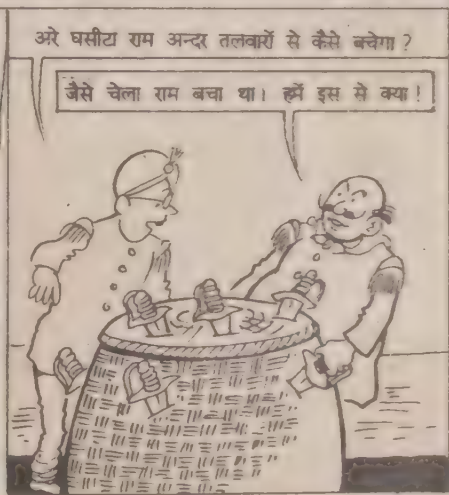
अरे घसीटा राम अन्दर तलवारों से कैसे बचेगा ?
जैसे चेला राम बचा था। हमें इस से क्या!

इसी तरह तलवारें अन्दर जाती रहीं। घसीटा राम इधर उधर सरक कर बड़ी मुश्किल से अपने को बचाता रहा। और टोकरे से निकलने की कोशिश करता रहा। अब हालत यह थी, कि अनाड़ीपन में मोटू की एक तलवार भी और टोकरे के अंदर जाती तो घसीटा राम के जिस्म से आर-पार हो जाती।
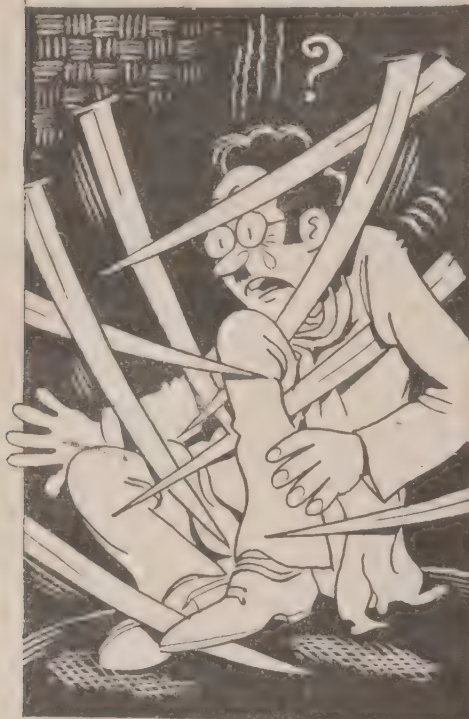
टोकरे से निकलने की कोशिश में टोकरा टूट गया और घसीटा राम जान बचा कर भाग लिया।

आगामी अंक में इन जोकरों के साथ फिर ताली बजाइये और खुशियों का ताला खोलिये। दीवाना
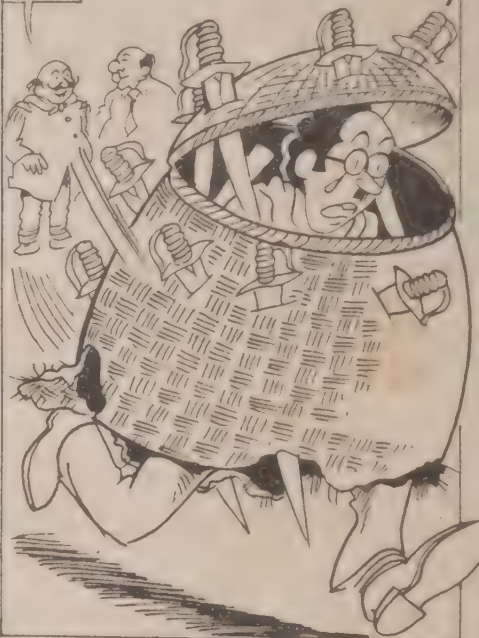
भाग-2

डयूक रोजा ने विदेशी भाषा में तेज़ी से ड्राईवर को आदेश दिये, जिनके उत्तर में उसने सिर हिलाया। वह दोनों फिर बिलकुल चुपचाप हो गये और लड़कों ने देखा कि इसके बाद ड्राईवर अत्यन्त सावधानी से यातायात के हर नियम का पालन कर कार चला रहा था।

कुछ समय बाद उनकी कारों का रुख ताज की ओर हो गया। जितनी देर लड़के कार में बैठे रहे, युवराज जोरो भारत के विषय में तरह-तरह के प्रश्न पूछता रहा, और तीनों लड़के उनके उत्तर देने में पूर्णतया व्यस्त रहे। और जब वे ताज पहुँचे तो वहाँ की सुन्दर कला देखने में लीन हो गये और इस कारण अधिक बातचीत का समय नहीं मिला।

एक समय जब 'जोरो' ने देखा कि डयूक रोजा थोड़ा पीछे रह गया है तो उसने शरारत के रूप में लड़कों से कहा चलो भीड़ में घुस कर दुबारा इस खंड में घुस जाते हैं और भाग कर चारों भीड़ में घुस कर अन्दर चले गये। कुछ क्षण बाद जब वे बाहर निकल रहे थे तो उन्होंने देखा, डयूक रोजा अपने आदमियों के साथ बड़ी घबराहट के साथ इधर-उधर भाग दौड़ कर रहा है। उनको बाहर निकलते देखते ही मुस्तैदी से इनकी ओर बढ़ा, इससे पहले कि वह कुछ बोले युवराज जोरो ने कहा 'तुम कहाँ रह गये थे, मैं डयूक स्टीफन को बताऊँगा की तुम मेरे साथ नहीं रहते थे'।

''परन्तु—परन्तु—परन्तु'' आदमी हड़बड़ा कर बोला। जोरो ने उसे चुप करते हुए कहा ''काफी हो गया, अब हम वापिस चलते हैं, मुझे खेद है हम अपने कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण दुबारा ये स्थान नहीं देख पायेंगे। वापिस बड़ी कार के पास पहुँच कर जोरो ने 'रोजा' को पीछे आने वाली कार में बैठने का आदेश दिया। और इस प्रकार राजधानी वापिस आते समय चारों लड़के खुल कर बातचीत करते रहे।

युवराज जोरो लड़कों से उनके विषय में प्रश्न करता रहा और तीनों लड़कों ने बारी बारी उसे बताया वे कैसे मित्र बने और ''तीन जासूस'' फर्म का श्रीगणेश कैसे हुआ। इसके अलावा उन्होंने जोरो को ये भी बताया कि उनकी राणा दे से मित्रता कैसे हुई और उन्होंने अन्य गुत्थियाँ कैसे सुलझायीं।

'बहुत खूब' जोरो बोला, ओह! लेकिन मुझे तुमसे इर्ष्या हो रही है तुम लोग एक दम स्वतंत्र हो, तुम्हें कोई किसी काम से रोकता टोकता नहीं। काश! मैं युवराज न होता, अब तो मेरा पहला कर्त्तव्य अपने देश का हित है, हालाँकि हमारा देश बहुत ही छोटा है। मैं स्कूल में कभी पढ़ा नहीं, मुझे सदा ही मास्टरों ने पढ़ाया है और इसी कारण मेरे बहुत कम मित्र हैं। मैंने कभी कोई

रोमांचकारी कार्य नहीं किया। मेरा इस देश में आकर तुमसे मिलना मेरे बड़े सौभाग्य की बात है। आज का दिन मेरे जीवन का एक बहुत सुखद दिन है।

'क्या मैं तुम्हें अपना मित्र समझ सकता हूँ'? उसने पूछा, 'ये मेरी हार्दिक इच्छा है'।

'हमें तुम्हारा मित्र बन कर बहुत खुशी होगी', महिन्दर ने तुरन्त उत्तर दिया।

'धन्यवाद, युवराज जोरो मुस्कुराया। "क्या तुम्हें मालूम है कि आज पहली बार मैंने डयूक रोजा को जवाब दिया है। इससे इन्हें बहुत धक्का पहुँचा। मुझे पूरा विश्वास है डयूक स्टीफन भी इससे स्तम्भित होगे। आख़िरकार मैं ही युवराज हूँ, और मैं युवराज ही रहना चाहता हूँ, क्या ख्याल है?"

"अपना प्रभुत्व दिखाओ? राजू ने सुझाया, परन्तु श्याम बोला "अपनी धाक चारों और जमाओ"।

"ये हुई बात," जोरो प्रसन्न हो कर बोला। "डयूक स्टीफन को कई आश्चर्य मिलेंगे।"

अब तक ये लोग माथुर कबाड़ी घर के क्षेत्र में आ पहुँचे थे राजू ने ड्राईवर को घर का रास्ता बताया। कुछ ही क्षणों में लिमोसिन माथुर कबाड़ी घर के लोहे के बड़े दरवाज़े के भीतर प्रवेश कर रही थी।

जैसे ही वे उतरे राजू ने जोरो को हैडक्वाटर देखने का निमन्त्रण दिया। जोरो ने सिर हिला कर मना करते हुए कहा, 'मुझे खेद है, समय कम है, आज मुझे एक भोज पर जाना है और कल हम हवाई जहाज़ से तरानिया वापिस चले जायेंगे।

तरानिया की राजधानी डेनजो है। वहीं मेरा महल है यह महल एक प्राचीन महल के स्थान पर बना हुआ है। इस महल में लगभग तीन सौ कमरे हैं, ये बहुत खुला है और इतना आरामदेह नहीं है। यह युवराज होने का एक अभिशाप है। 'नहीं—, मै रुक नहीं सकता, हालाँकि मैं चाहता हूँ। मुझे वापिस जाना है और जाकर अपने देश पर शासन करने की तैयारी करनी है। परन्तु मैं तुम्हें कभी भी नहीं भूलूँगा और एक न एक दिन हम फिर मिलेंगे। मुझे इसका पूरा विश्वास है। इसके साथ ही वह बड़ी लिमोसिन में बैठ कर चला गया जिसके पीछे दूसरी अंगरक्षकों से भरी कार चली गई। तीनों लड़के खड़े उसे जाते देखते रहे।

"युवराज होने पर यह एक अच्छा व्यक्ति जान पड़ता है," महिन्दर ने टिप्पणी की। "राजू—राजू तुम क्या सोच रहे हो, तुम्हारे मुँह पर वो ही झलक है।"

राजू ने आँख मिचकाई।

"मैं सोच रहा था," वह बोला आज सुबह की कार की घटना के विषय में, तुम्हें इस घटना में कोई अजीबपन महसूस नहीं हुआ?"

"अजीब बात" श्याम बोला, "नहीं, केवल भाग्यवश हम उनसे टकराने से बच गये, सिर्फ़ ये ही ध्यान आता है"।

"तुम कहना क्या चाहते हो?" श्याम ने पूछा।

"मारकोस वह जो जोरो की कार का ड्राईवर था साइड की गली से अक्समात् ही हमारी कार के आगे आ गया था। उसने हमें अवश्य देखा होगा। परन्तु गाड़ी तेज़ कर हमारे आगे से निकलने का प्रयास करने के बजाये उसने ब्रेक लगा दिये थे। यदि बरखा सिंह जैसा कुशल ड्राईवर है वैसा न होता तो हमारी कार उस कार से ठीक उस स्थान पर जा कर टकराती जहाँ युवराज जोरो बैठा था। और शायद इस दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती"।

'मारकोस ने घबरा कर ऐसा किया होगा'. श्याम बोला, 'शायद', राजू बुदबुदाया "ख़ैर चलो, मेरे विचार से इस का इतना महत्व नहीं है। जोरो से मिल कर मज़ा आ गया मुझे तो दुबारा उससे मिलने की आशा नहीं है।"

परन्तु राजू का अनुमान गलत था।

आश्चर्यजनक निमन्त्रण—

कुछ दिनों बाद तीनों मित्र अपने हैडक्वाटर में मिल रहे थे ये एक पुराने ट्रेलर को पुरानी लकड़ी और लोहे के ढेर में छिपा कर माथुर कबाड़ी घर में खड़ा किया हुआ था। श्याम सुबह की डाक के एक पत्र को पढ़ कर चुका था जिसमें किसी स्त्री के खोये कुत्ते को ढूंढ़ने की प्रार्थना की गई थी कि टेलीफोन बजा—ये टेलीफोन इन लड़कों का निजी फोन था जिसका खर्चा ये स्वयं अपनी मेहनत से करते थे ये अधिकतर खामोश ही रहता था, परन्तु इसकी घंटी सुन कर तीनों लड़के उत्सुक हुए बिना नहीं रह पाते थे। राजू ने झपट कर फोन का रिसीवर उठाया।

''हेलो'' वह बोला ''तीन जासूस, राजू माथुर बोल रहा हूँ।''

''नमस्ते राजू,' राणादे का स्वर हैडक्वाटर में लगे फोन से हो कर लाउडस्पीकर पर सुनाई दिया। ''तुम्हें दफ्तर में पाकर खुशी हुई मैं तुम्हें बताना चाहता था, कि जल्दी ही कोई तुम्हें मिलने आ रहा है।''

''कोई मिलने वाला ?'' राजू ने दोहराया '' किसी केस के विषय में क्या'', श्रीमान''?

''मै तुम्हें कुछ नहीं बता सकता,'' राणादे ने उत्तर दिया।

''मैंने गोपनीयता की शपथ ली है, मैंने तुम्हारे इन अतिथि से बहुत लम्बी बातचीत की है और तुम्हारी सिफारिश बहुत खुल कर की है। तुम्हें एक अनोखा निमन्त्रण मिलने वाला है। मै तुम्हें केवल इतना ही बता सकता हूँ, मै तुम्हें आगाह कर देना चाहता था, अच्छा अब नमस्ते करता हूँ।''

उन्होंने फोन बन्द कर दिया और साथ ही राजू ने भी रिसीवर रख दिया।

तुम्हारे विचार से क्या कोई नया केस है ? महिन्दर ने पूछा। इससे अधिक अनुमान लगाने का समय उनके पास न था क्योंकि ठीक इसी समय राजू की आँटी मिसेज़ माथुर की तेज़ आवाज़ छत की बिजली के पास से सुनाई दी, ''राजू ! सामने आओ, तुम्हें कोई मिलने आया है''।

एक ही क्षण पश्चात लड़के दो नम्बर की टनल से जो कि एक बहुत बड़ा पाइप ट्रेलर के नीचे छुपा कर बनी हुई थी पीछे की ओर बाहर निकले। पीछे की ओर से कबाड़ के ढेर को पा कर कुछ ही क्षणों में ये सब लड़के कबाड़ी घर के दफ्तर में पहुँच गये।

एक छोटी कार वहाँ ठहरी हुई थी जिसके निकट एक जवान युवक खड़ा था। उन्होंने उसे तुरन्त पहिचान लिया, ये ही भारतीय था जो युवराज जोरो को मार्गदर्शक कार में उस दिन था जिस दिन इन लड़कों की कार जोरो की कार से टकराते-टकराते बची थी।

''हैलो'', वह बोला, ''मेरे विचार से तुम लोगों को दुबारा मुझ से मिलने की आशा न

शेष पृष्ठ २४ पर
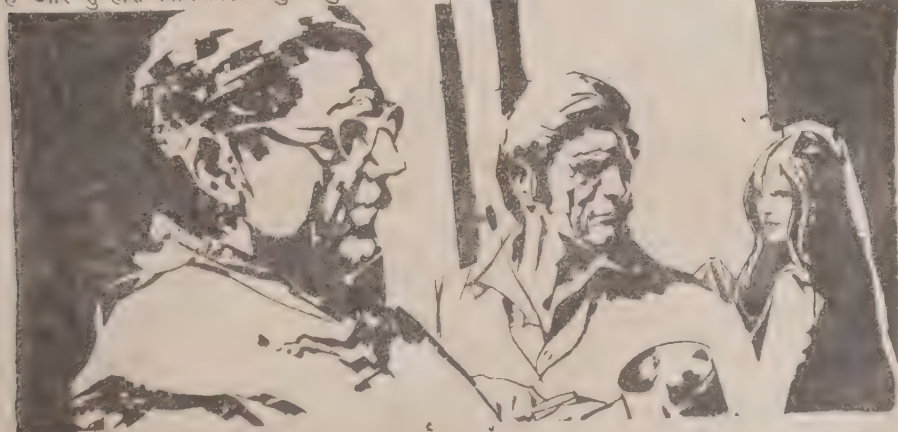
सवाल यह है ?

सवाल यह है।
काल तीन प्रकार के होते है।
भूत काल, भविष्य काल.
और वर्तमान काल।

जवाब हाजिर है।
दो और होते है जी।
लोकल काल और ट्रंक काल।

सवाल यह है?
मैं ने कल तुम्हें इंगलैंड का इतिहास
पढ़ाते समय बताया था, वहां नाम बादशाह का
होता है, पर अधिकार पार्लियामेंट
के पास होते हैं।
क्या समझे?
सब समझ गया।

जवाब हाजिर है।
मतलब है बादशाह डैडी होते हैं
और पार्लियामेंट मम्मी।

सवाल यह है?
तुम पौधा क्यों
उखाड़ लाये?

जवाब हाजिर है।
मैं क्या करता.
वहां लिखा था फूल तोड़ना मना है!

जो लाजवाब है?

कुछ और लाजवाब सवाल देखिये आगामी अंक में।
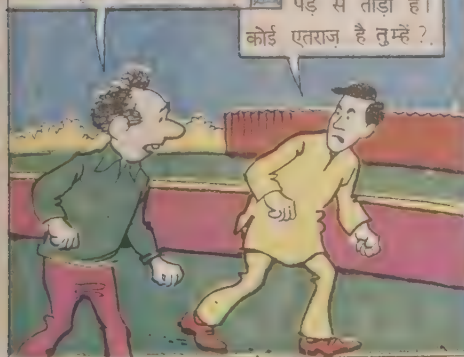
पृष्ठ २१ से आगे
थी। इस बार मैं अपना परिचय देता हूँ, मैं वीरेशनाथ हूँ, और ये मेरे परिचय पत्र हैं।''

उसने इन्हें एक सरकारी सा लगनेवाला कार्ड दिखाया और दिखा कर वापिस अपने बटुए में रख लिया।

'भारतीय सरकार—सरकारी कार्य'', उसने कहा। हम अकेले में कहाँ बातचीत कर सकते हैं?''

''यहीं पर'', राजू बोला, उसकी आँखें बाहर को निकल आई थीं, एक सरकारी ऐजेन्ट और इनसे अकेले में बात करने की प्रार्थना राणादे से भी इनके विषय में पूछताछ करके आया है। इस सब का मतलब क्या हुआ?''

वह वापिस सब को वर्कशाप के भाग में ले गया और दो पुरानी कुर्सियाँ ढूंढ़ निकाली। श्याम और महिन्दर वहाँ पड़े एक डब्बे पर बैठ गये।

''हो सकता है तुमने मेरे यहाँ आने का मकसद जान लिया हो, वीरेशनाथ बोला। उन्हें कोई अनुमान न था परन्तु वह उसके बताने की प्रतीक्षा करते रहे। मैं यहाँ तरानिया के युवराज जोरो के सम्बन्ध में आया हूँ।

''युवराज जोरो। श्याम बोला वे कैसे हैं?''

''युवराज ठीक है तथा उन्होंने अपनी शुभ कामनायें भेजी हैं।'' वीरेशनाथ बोला।

''मैं दो तीन दिन पहले ही उन से बात करके चुका हूं, बात यह है कि उन्होंने तुम तीनों को मिलने को बुलाया है, तथा उनकी इच्छा है कि तुम लोग दो सप्ताह बाद उनकी ताजपोशी के समय वहीं रहो''।

''वाह! श्याम बोला ''युरोप तक जाना? क्या आप को पूरा विश्वास है, वह हमें चाहते हैं?''

''तुम लोग और तुम लोगों के सिवाये किसी को नहीं,'' वीरेशनाथ ने उत्तर दिया ''ऐसा प्रतीत होता है, तुम सब उनके अच्छे मित्र उसी दिन बन गये जब तुम उनके साथ 'ताज' गये थे। तरानिया के युवकों में उनके अधिक मित्र नहीं हैं। वहाँ उन्हें पता नहीं चलता कौन उनका सच्चा मित्र है और कौन उनके युवराज होने के कारण उनकी चमचागिरी कर रहा है। परन्तु तुम्हारा उन्हें विश्वास है। वे चाहते हैं कुछ मित्र उनके साथ रहें और इसके लिये उन्होंने तुम्हें चुना है। मैं तुम्हें सच्ची बात बताता हूँ—इसका विचार उनके दिमाग में मैंने ही डाला था''।

''आपने डाला था?'' श्याम ने पूछा ''परन्तु क्यों?''

''ठीक है', वीरेशनाथ बोला ''ये बात इस प्रकार है, तरानिया एक शान्ती पसन्द देश है, इसका किसी ओर झुकाव नहीं है

जैसे स्वीज़रलैंड का। हम लोग इसे पसन्द करते है। इसका मतलब है तरानिया हमारे किसी दुशमन देश की सहायता नहीं करेगा।'' ''तरानिया जैसा छोटा राष्ट्र किसी की क्या सहायता कर सकता है?'' राजू ने प्रश्न किया।

''तुम्हें आश्चर्य होगा, ये अपने देश में गुप्तचरों का अड्डा बनने दे सकते हैं। परन्तु इस समय इस विषय में अधिक बात नहीं करूँगा। अब सवाल यह है कि क्या तुम लोग जाओगे?''

लड़के कुछ क्षण सोच में पड़ गये। वे जाना अवश्य चाहते थे परन्तु कुछ कठिनाइयाँ थीं पहले अपने परिवारों की अनुमति और फिर जाने आने का खर्चा इत्यादि।

वीरिशनाथ ने इन समस्याओं का बहुत जल्दी समाधान कर दिया ''मै तुम लोगों के माता-पिता से बात कर लूँगा, मेरे ख्याल से मै उन्हें विश्वास दिला दूँगा कि तुम वहाँ पूर्ण सुरक्षित हाथों में रहोगे। मै वहाँ तुम्हारे साथ ही रहूँगा और तुम लोगों का ख्याल रखूँगा। दूसरे तुम युवराज के मेहमान होगे। रही खर्चे की बात हम तुम्हारे हवाई टिकट का प्रबन्ध कर देंगे तथा तुम्हें जेब खर्च भी देंगे ताकि तुम तरानिया में पूर्ण स्वतन्त्र भारतीय लड़कों के समान रहो—कम से कम वैसे तो जैसे तरानिया वाले तुम्हें समझते हैं। इनका अर्थ है कुछ तोफ़े ख़रीदना तथा फोटो इत्यादि खींचते घूमना।''

श्याम और महिन्दर इतने खुश थे कि उन्हें और कुछ सूझ ही नहीं रहा था परन्तु राजू कुछ सोच में पड़ा हुआ था। 'भारतीय सरकार को ये सब करने की क्या ज़रूरत है', उसने पूछा, ''कोई मेहरबानी हो रही है, सरकारें इस प्रकार की मेहरबानियाँ करती तो नहीं।''

''राणादे ने कहा ही था, तुम बहुत चतुर हो,'' वीरिशनाथ ने कहा ''और मुझे खुशी है वे ठीक ही थे। देखो लड़को, सरकार तुम्हें नन्हें जासूसों के समान कार्य करने को तरानिया भेजना चाहती है।''

''तुम्हारा मतलब, युवराज जोरो की गुप्तचरी करना?'' श्याम ने शक करते हुए पूछा।

वीरिश नाथ ने सिर हिलाया, ''बिलकुल नहीं, परन्तु अपनी आँखें खुली रखना। हर वाकये को ध्यान से देखना और कोई शक की बात दिखाई या सुनाई दे तो, तुरन्त रिपोर्ट करना। बात ये है तरानिया में कुछ गडबड़ चल रही है। हमें अभी पता नहीं क्या बात है। हमें आशा है इसका पता लगाने में तुम हमारी सहायता अवश्य कर सकते हो।''

''ये बहुत अजीब सी बात प्रतीत होती है, 'राजू माथे में बल डाल कर बोला, 'मेरा ख्याल तो सरकार के अपने सूत्र होते हैं जिनसे—''

''हम लोग भी तो इन्सान ही है,'' वीरिशनाथ बोला, ''और तरानिया में कुछ भी पता लगाना बहुत कठिन कार्य है। बात ये है कि तरानिया वासी इतने स्वाभिमानी तथा घमंडी हैं कि वे किसी विदेशी से सहायता नहीं चाहते। सहायता करने का हाथ बढ़ाने से वे अपने को अपमानित समझते हैं। उन्हें अपनी स्वतन्त्रता बहुमूल्य है।''

''फिर भी, हमें खबरें मिलती रहती हैं कि कुछ गड़बड़ी चल रही है। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ के कार्यकारी शासक डयूक स्टीफन की नीयत ठीक नहीं है। डयूक स्टीफन तरानिया के शासक तभी तक हैं जब तक युवराज जोरो की ताजपोशी न हो

शेष पृष्ठ ४१ पर

रैगिंग किट

अब अगले वर्ष से सीनियर स्टूडेंटों को फ्रैशरों की रैगिंग के लिये तरीके सोचने की माथा पच्ची नहीं करनी पड़ेगी। हम रैगिंग किट बनाने की सोच रहे हैं। इस किट में रैगिंग करने के सामान का सैट होगा। फिलहाल हमारे रैगिंग किट में निम्न आइटमें होंगी :—

गर्ल फ्रैशरों के लिये नायलोन का बना कानखज़ूरा फ्रैशर के हाथ पीछे ले जाकर बांधें व कनखज़ूरा उसकी टी शर्ट के अन्दर छोड दें

मस्कीटो सैंट—इस सैंट से ऐसी ही बू आयेगी जैसे खटमल मारने पर आती है। फ्रैशर से इसकी मालिश कर मुंह ढंक कर सोने के लिये कहें।
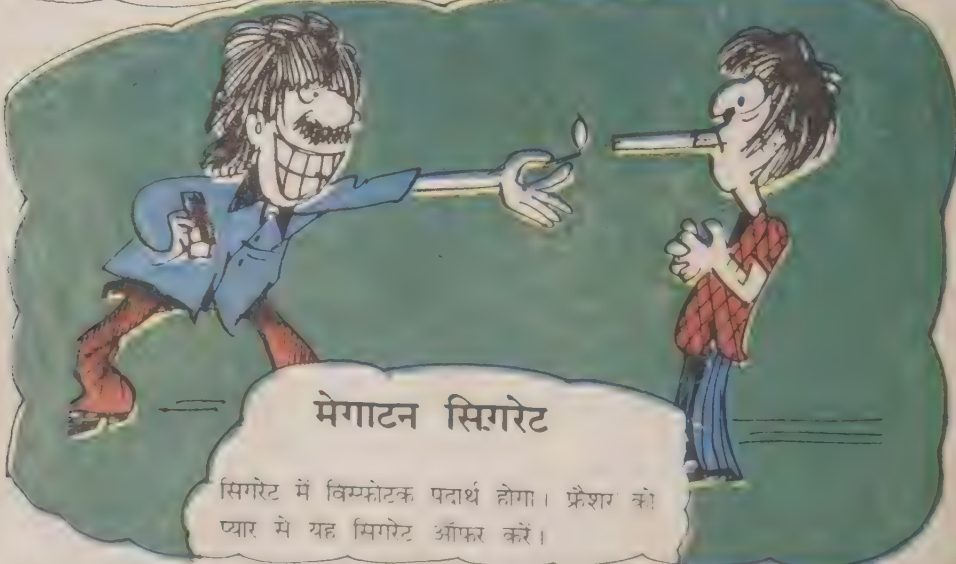
मेगाटन सिगरेट

सिगरेट में विस्फोटक पदार्थ होगा। फ्रैशर को प्यार से यह सिगरेट ऑफर करें।

दस्ताना
यह दस्ताना फ्रैशरों से हाथ मिलाने के काम आयेगा। इसके हथेली वाले भाग में रेगमाल लगा होगा। खूब गर्मजोशी से हाथ मिलायें और झटके दें।
टीथ कवर्स
दांतों पर चढ़ाने के खोल जिन्हें पहनने पर मुंह में ऊबड़-खाबड़ छेद रह जायेंगे और बात करते समय सामने वाले के मुंह पर थूक के छींटे पड़ेंगे। इन्हें पहन फर्स्ट ईयर वालों से बातें करें।
१० किलोग्राम जूते
दस किलोग्राम वज़न के जूते फर्स्ट ईयर फूल को पहना कर खूब जोर से डिस्को कैसेट बजायें और उससे नाचने के लिये कहें।
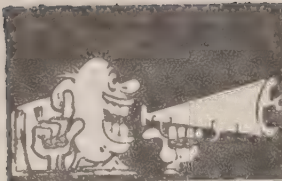
प्रीतम सिंह, मेरठ : प्यार में कदम सम्भल न पायें तो क्या होता है ?

उ० : जिसे प्यार किया जाये उसके बालों के हाथ संभल नहीं पाते और जबड़ों पर आ पड़ते हैं।

कसूर होता है कदमों का और शामत आती है दांतों की। फिर बारी आती है अपने मरियल हाथ देखने की और यह शेर याद करने की।

तेरे माथे की शिकन देख के अकसर मैं ने,
अपने हाथों की लकीरों को बहुत देखा है।

सुरेन्द्र खुराना, पानीपत : डीयर अंकल, कानून और प्रेम दोनों अंधे होते हैं, फिर भी लोग इन्हें क्यों अपनाये हुये हैं ?

उ० : क्योंकि दोनों के अंधेपन में एक बड़े मज़े की बात है सुरेन्द्र जी, जिस के लिये कहा गया है, ''अंधा बांटे रेवड़ियां मुड़ मुड़ अपनों को दे.''

अमल निगम, उलहासनगर : चाचा जी, यदि नेता अभिनेता बन जायें तो क्या हो ?

उ० : समाचार पत्रों में इस प्रकार के समाचारों की भरमार हो जाये। संजीव कुमार के बदलते अभिनय की तरह अब देखिये, फ़िल्म ''अदला बदली''में बहुगुणा के बहुरंगी रूप। हेमा मालनी धर्मेन्द्र की ज़ुल्फ़ों से तंग आ कर अब राजनारायण की दाढ़ी की ओर खिंचने लगी।

सीधे ही आप के शहर में दिखाई जाने वाली है, कला और कलाबाज़ी से भरपूर, चरण सिंह की नई फिल्म, ''भूसे की गाड़ी, सब से अगाड़ी।'' चरित्र अभिनेता मोरारजी देसाई ने अपनी फ़िल्म ''मगरमच्छ के आंसू''की तारीफ़ लिखवाने के लिये पत्रकारों को शराब की पार्टी दी। और फिल्म में गाया अपना यह गीत गा कर सुनाया :

सारे जहां से अच्छा, पाकिस्तान हमारा,
हम बुलबुलें है उस के
वह गुलिसतां हमारा।

सुनील दत्त, पटना : ''प्यार'' और प्रेम में क्या अंतर है ?

उ० : वही, जो ''बैगन'' और ''बताऊं''में है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.
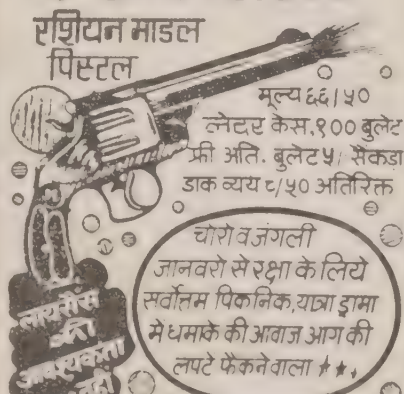
मदहोश

आह ! इतनी बड़ी आइसक्रीम तो मैंने आज तक नहीं देखी। पानी आ रहा है मुंह में।

अपने किसी यार ने बर्थडे केक की जगह यह सुपर आइसक्रीम भेजा होगा। उसे याद आया होगा आज मदहोश का शुभ जन्म दिवस है। टेस्ट करके देखूं
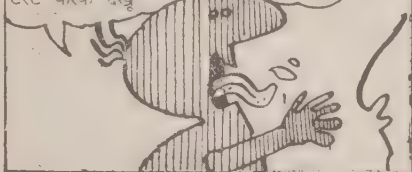
मदहोश
होश में आ

सफ़ेद साड़ी पहने औरत तुझे आइसक्रीम नज़र आती है ? यही हाल रहा तो तू जल्दी ही मरण दिवस मनायेगा अपना।
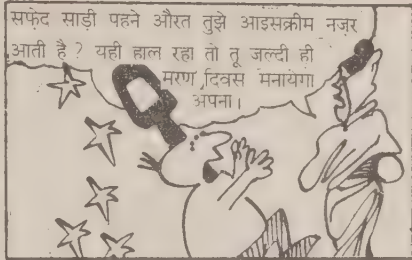
बुरे फंसे
इस चक्कर में
ज़रा यह ज़िप लगा दो डीयर। बन्द नहीं हो रही है।
तुम्हारी ज़िप बन्द नहीं हो रही है और मेरी टाई खुल नहीं रही है।
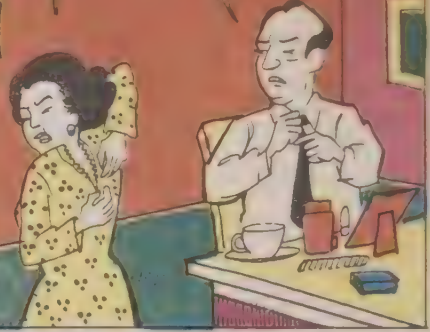
बड़ा ख़राब लाक है इसका। खुलता है तो बन्द नहीं होता और बन्द होता है तो खुलता नहीं।

क्या बात है ? ज़िप बन्द नहीं हो रही है क्या ? बन्द तो हो गई है, पर अब खुल नहीं रही है।

ओफ़्फो ! लगता है अब तो काटनी पड़ेगी।
क्या काटनी पड़ेगी ?

अपनी गर्दन या टाई

नामी चोर

आसमान से गिरे समुद्र में डूबे
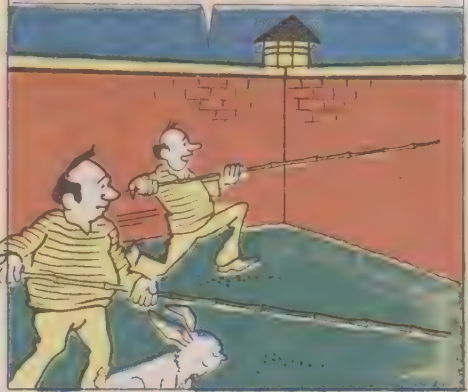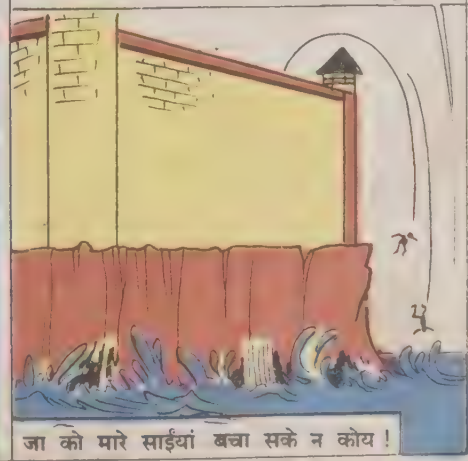
विश्व में क्रिकेट टैस्ट सैंटर

अब तक विश्व में कुल ४४ टैस्ट सैंटर में टैस्ट खेले जा चुके हैं। पूरा विवरण:

भारत (९) बंगलौर बम्बई, कलकत्ता, देहली, हैदराबाद, कानपुर, लखनऊ, मद्रास व नागपुर।

पाकिस्तान (९) बहावलपुर, ढाका, फैसलाबाद, हैदराबाद सिंध, कराची, लाहौर, मुल्तान, पेशावर व रावलपिंडी।

इंगलैड (७) वर्गिंघम, लीडस, लार्डस, मन्चैस्टर, नॉटिंकम, शैफील्ड व ओवल।

वेस्ट इंडीज़ (५) एंटीगुआ, ब्रिजटाऊन, जाजिटाऊन, किंगस्टन, व पोर्ट ऑफ स्पेन।

आस्ट्रेलिया (५) एडीलेड, मेलबोर्न, ब्रिसबेन, पर्थ व सिडनी।

न्यूजीलैड (५) ऑकलैंड, क्राइस्ट चर्च, डुनेडिन, नेपियर व बिलिंगटन।

द० अफ्रीका (४) केपटाऊन, डर्बन, पोर्ट एलिजाबेथ व जोहन्स बर्ग।

(इन सैंटरों पर कुल ५२ मैदानों का प्रयोग हुआ है। बम्बई व जोहंसबर्ग में तीन-२ मैदानों पर खेले गये। बिस्बेन, मद्रास, डर्बन व लाहौर ने दो-दो मैदानों पर टैस्ट खिलाये हैं।)

कप्तानी

सबसे अधिक टैस्टों में कप्तानी का सेहरा वेस्ट इंडीज के लॉयड के सिर है। अब तक वे ४६ टैस्टों में कप्तानी कर चुके हैं इनमें से १९ जीते, १७ बराबरी की व १० हारे इस प्रकार उनकी सफलता का प्रतिशत ५९.७८ रहा।

इसके अतिरिक्त कप्तानी के विभिन्न देशों के कीर्तिमान इस प्रकार हैं:

भारत—नवाब मंसूर अली खां पटौदी—४० टैस्ट।

आस्ट्रेलिया—बॉबी सिम्पसन—३९ टैस्ट।

न्यूजीलैड—जोहन रीड—३४ टैस्ट

पाकिस्तान—अब्दुल हफीज़ कारदार—२३ टैस्ट

द० अफ्रीका—हर्बी टेलर—१८ टैस्ट

इस होटल का कुक बढ़िया

चारा भैंसों के लिये बनाता था
अब यहां

खाना बनाता है

दीवाना
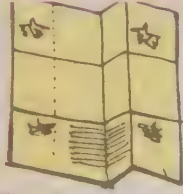
दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये
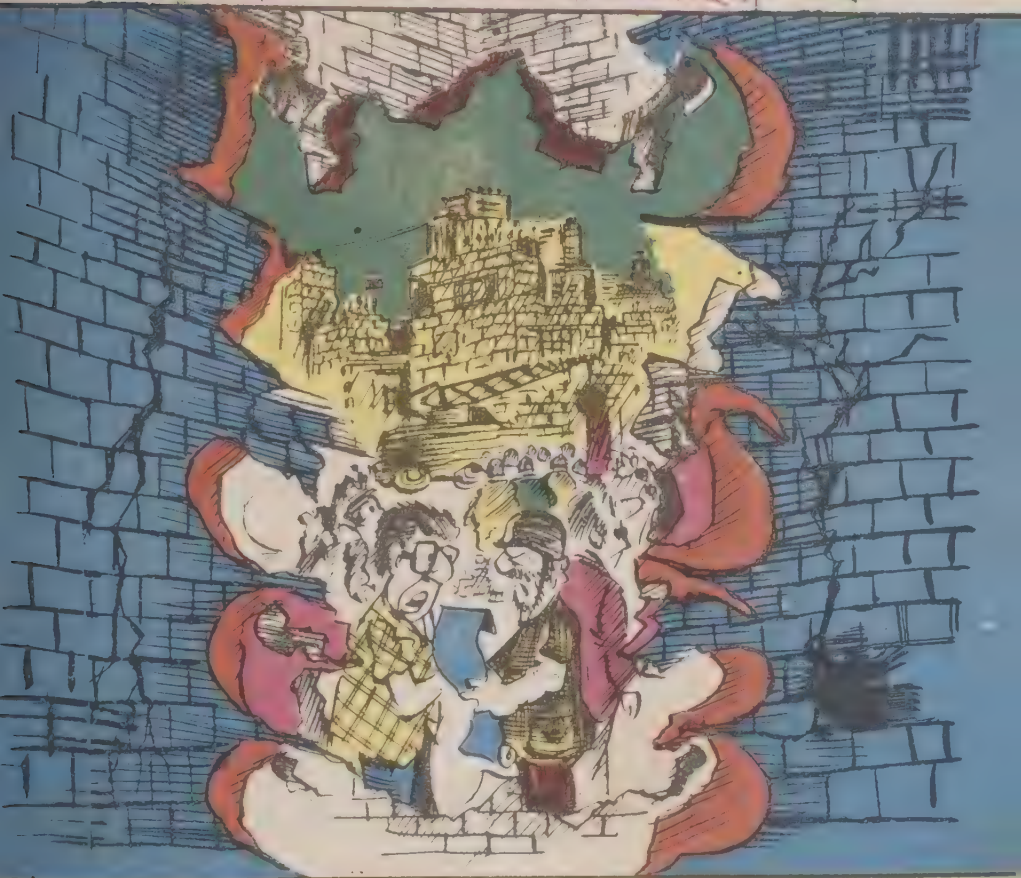
भारत में मकानों की समस्या जटिल है। नये मकान बनाने की राह में रोड़े हैं, पुराने जीर्ण शीर्ष मकान। इनको गिराना भी एक समस्या है। एक तो गिराने के विकसित तरीके हमारे पास नहीं हैं, दूसरे इन टूटे-फूटे मकानों में लोग घरेलू उद्योग व गृहस्थियां खोले बैठे हैं जो इन्हें गिराने नहीं देते। इन दीवारों को बिनाश्रम के बहुत कम लागत में ही धराशायी किया जा सकता है अगर इन मकानों में ये खोले जायें जिनका पता पृष्ठ मोड़ने पर लगेगा।

प्र० : नर चिड़िया के पर मादा चिड़िया से अधिक रंगीन और सुन्दर क्यों होते हैं ?

प्र० : इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए सबसे पहले हमें यह जानना पड़ेगा कि चिड़ियों के पंख रंगीन होते ही क्यूँ हैं। इसको समझाने क लिये बहुत से कारण दिये गये है परन्तु अभी तक वैज्ञानिक इस विषय को पूरी तरह समझ नहीं पाये हैं। इसको समझ न पाने के कारण में यह कठिनाई है कि कुछ पक्षियों के परों के रंग बहुत चटकीले होते हैं तो कुछ के धुँधले और फीके होते हैं। कुछ पक्षी दूर से ही चमकीले स्तम्भ के समान दिखाई देते हैं तथा कुछ बिलकुल दिखाई भी नहीं देते।

हम कुछ ऐसे नियमों का पता लगाते हैं जा अधिकतर पक्षियों पर लागू हो सकते हों। एक नियम है कि अधिक चटकीले रंगों की चिड़ियाँ अपना अधिक समय पेड़ों की चोटी, हवा में या पानी में व्यतीत करती हैं इसके विपरीत फीके रंगों की चिड़ियाँ धरती पर या धरती के निकट ही रहती हैं।

दूसरा नियम जिसमें बहुत से अपवाद हैं ये है कि पक्षियों का ऊपरी भाग तेज़ रंग का निचला हल्के रंग का होता है इस प्रकार के तथ्यों से पता चलता है कि चिड़ियों के रंग उनकी रक्षा के लिये होते हैं जिससे वे आसानी से शत्रु का दिखाई न दे सकें। इसे सुरक्षात्मक रंग कहते हैं उदाहरण के लिये घास में रहने वाली चिड़ियों का रंग घास से बहुत मिलता है इसी प्रकार वुडकाक का रंग बिलकुल पेड से गिरी सूखी पत्तियों के समान होता है।

अब ये सोचना है कि यदि रंग चिड़िया की सुरक्षा से सम्बन्ध रखते हैं, तो किसे अधिक सुरक्षा चाहिये नर को या मादा को ? जाहिर है मादा को क्योंकि उसे घौंसले में अंडों पर बैठ कर उन्हें सेना होता है। इसी कारण प्रकृति ने मादा को नर की अपेक्षा फीके रंग प्रदान किये हैं ताकि शत्रुओं से उनका बचाव हो सके।

इसके अतिरिक्त नर के चटकीले रंग मधुमास में मादा को नर की ओर आकर्षित करते हैं। इन्हीं दिनों में नर पक्षियों के रंग सबसे अधिक चटकीले होते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

घरेलू नुक्ते

• प्लाटिक के फूलों को साफ़ करने के लिये उन्हें एक बड़े कागज़ के लिफ़ाफे में डाल कर थोड़ा सा नमक उसमें डाल दो, लिफाफे को जोर जोर से हिलाओ। पहले तो नमक मैला नहीं दिखाई देगा परन्तु पानी से धोने पर काला रंग दिखाई देगा।

• खाना कढ़ाई या तवे पर चिपकने से बचाने के लिये पहले कढ़ाई को आग पर काफी गरम हो जाने दो फिर उसमें तलने के लिये घी या तेल डालो। आमलेट बनाते समय फराईंग पैन को भी इसी प्रकार गरम कर लेने से आमलेट पैन में चिपकता नहीं।

सिलबिल पिलपिल

पुराने कपड़े नयी जासूसी

जी हां ! आखिर हमें वह रास्ता सूझ ही गया। हम दुनिया में पहले फेरी वाले जासूस होंगे। अपनी जासूसी के साज-बाज से लदी रेहड़ी लेकर सड़क-सड़क, गली-गली चक्कर लगायेंगे
और आवाज़ दे दे कर अपनी जासूसी होना बेचेंगे। जब फेरी वाले प्याज़, टमाटर, आम, खरबूज, तरबूज, भेलपूरी, आलू छोले बेच सकते हैं तो हम क्यों नहीं ? हमारा नारा होगा...
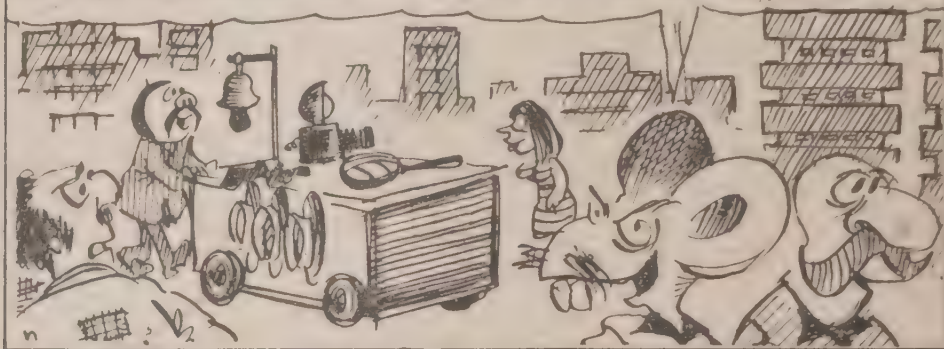
पुराने कपड़े दे दो नयी जासूसी करवा लोऽऽऽऽ !स्टेनलैस स्टील के बने उपकरणों से लैस जासूसी। ऐसा मौका बार-बांर हाथ नहीं आयेगा, खुश्बू आ नहीं सकती कागज के फूल से ....

अंकल आप सचमुच जासूस हैं ?
हैं हैं हैं ! क्या तुम्हें शक है बेटे ? हम खालिस देसी घी खाने वाले जासूस हैं।अगर किसी ने यह साबित कर दिया कि हम नाश्ते में बनस्पति घी में बने परांठे खाते हैं तो हम एक हजार रुपये नकद इनाम देंगे. बेटे तुम रो क्यों रहे हो ?
मैं घर से डेढ़ रुपया लेकर आइसक्रीम खरीदने निकला था। एक रुपये वाला सिक्का कहीं गिर गया आप उसे खोज सकते हैं।

पगले, इन्कार न कर। यह फेरी वाले जासूसी में मिला पहला काम है। बोहनी है, पहले काम से मुंह नहीं मोड़ा करते, पैसे चाहे कितने ही कम मिलें। एक रुपये का आधा अठन्नी तो यह दे ही देगा। हो सकता है वह अठन्नी हमारे लिये भाग्यशाली साबित हो।

बेटे वैसे तो हम इतने छोटे केस नहीं लेते लेकिन हम तुम्हारा काम कर देंगे। हमने अपनी जासूसी सेवा में ३०% केस, हरिजनों, गरीबजनों, भूतपूर्व सैनिकों, अपंगों व बच्चों के लिये रिजर्व रखे हैं उसी के अन्तर्गत हम यह केस करेंगे। रुपया मिल गया तो आधा हमारा होगा।
आधा दूंगा मैं।

आप यह क्या कर रहे हैं? सिर पर हैट पहन लिया और जेब में पिस्तौल ठूंस रहे हैं।
सारी तैयारी करनी पड़ती है, क्या पता कब क्या हो जाये? फौजी जिस तरह वर्दी पहन कर ही मोर्चे पर जाते हैं उसी तरह यह जासूसी आउटफिट हमारे लिये जरूरी है.
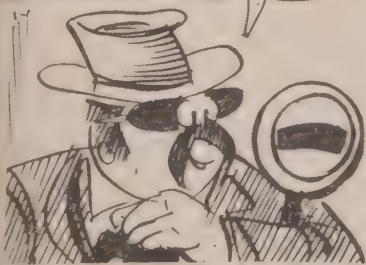
आंजकल हिन्दमहासागर में रूस और अमरीका अड्डे बना रहे हैं। हालत बहुत नाजुक है। हो सकता है तूम्हारे रुपये का सिक्का गुम होने में सी. आ. ई. का हाथ हो।
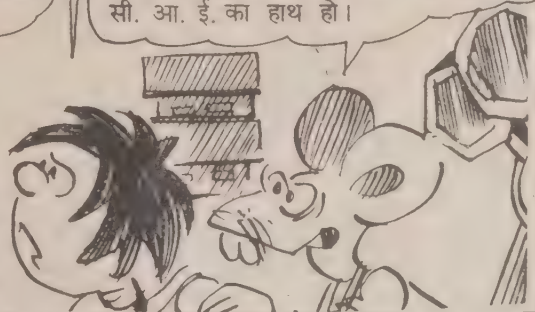
चलो दूर हटो, अब असली जासूसी के दाव पेच शुरू होने वाले हैं। यह बच्चों का खेल नहीं है। गोलियां चल सकती हैं। बम फट सकते हैं। जीनत अमान का कैब्रे डांस हो सकता है। अगर तुम्हारा रुपया गायब करने में
सी. आई. ए. का हाथ हो तो रूस की जासूसी एजेंसी के. जी. बी. ने भी जाल बिछा लिया होगा। तभी तो रोज प्रधानमंत्री इंदिरा जी कहती हैं कि बड़ी ताकतों के बीच शीत युद्ध से हमें बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है।
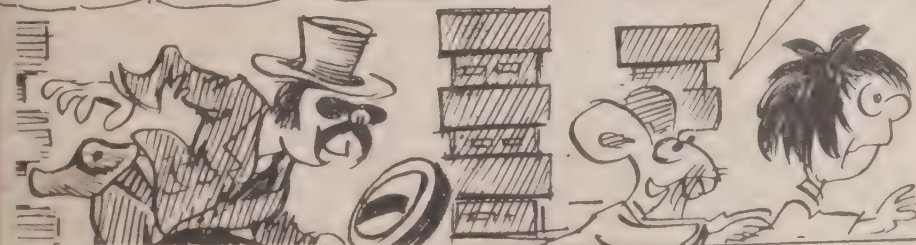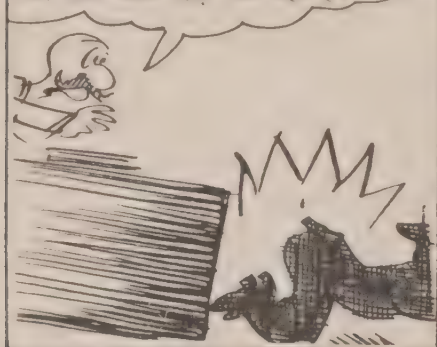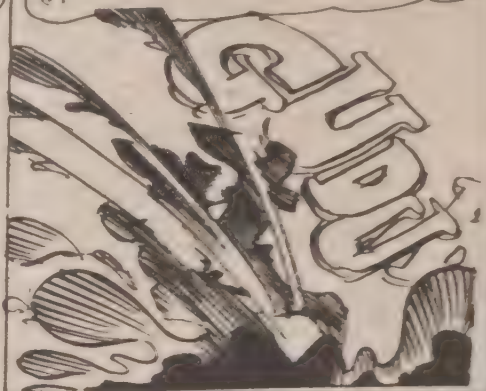
ओ भाईयों देखो सिलबिल के हैट में ऊपर क्या है? मुझे तो यह एक रुपये का सिक्का लगता है। बेटे, देखा जासूस कैसे नाटकीय ढंग से काम करते हैं। वह कभी कव्वाल बन कर कव्वाली गाते हैं। तो कभी मुंह के बल नाली में गिरते हैं।
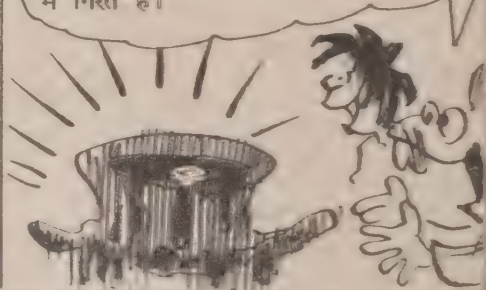
सिलबिल-पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

पृष्ठ २५ से आगे

जाये। और हो सकता है वे चाहते हों, ये ताजपोशी कभी न हो। प्रधानमन्त्री डयूक स्टीफन तथा वहाँ की उच्च कौंसिल जो कि हमारी पार्लियामेंट के समान है, बहुत छोटी सी गठी हुई संस्था है। हमारा अनुमान है, वे कुछ ऐसा करेंगे कि युवराज जोरो राजा न बन सके'।

''अब, साधारणतया ये तरानिया का अंदरुनी सियासी मामला है और हमारे देश का कोई इसमें दखल नहीं है। परन्तु पता चला है डयूक स्टीफन की योजना इससे आगे भी कुछ और बड़ी है। और इससे आगे अभी कुछ पता नहीं है। हमें पता चलाना है उसकी क्या योजना है।हो सकता है तुम लोग वहाँ महल में रहते हुए हमारे लिये कुछ जानकारी प्राप्त कर सको। हम लोगों में से कोई भी तरानिया वासियों के इतना निकट नहीं पहुँच सकता कि कुछ पता चल सके। हो सकता है, जोरो को कुछ पता हो, परन्तु सहायता मांगने में उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती हो, और शायद वह तुम्हें इस विषय में कुछ बता दे। और हो सकता है और लोग तुम्हें निरे बच्चे समझ कर लापरवाही में तुम्हारे सामने कोई बात बोल जायें।

''परन्तु सबसे बड़ा प्रश्न तो ये है, क्या तुम वहाँ जाना मंजूर करोगे?'' श्याम और महिन्दर राजू की और फर्म के मुखिया होने के कारण उत्तर देने को देखने लगे। राजू कुछ क्षण मौन रह सोचता रहा फिर उसने सिर हिला दिया।

''यदि आप चाहते हैं कि हम युवराज जोरो की सहायता करें तो हम तैयार हैं'' वह बोला यदि हमारे माता-पिता आज्ञा दें और मैंने जोरो से कहा था हम उसके मित्र हैं और हम उसके खिलाफ़ कुछ भी नहीं करेंगे''।

''ये ही तो मैं सुनना चाहता था!'' वीरेशनाथ बोला. ''सिर्फ एक एहतियात, जोरो

कों ये न बताना तुम्हें मालूम है तरानिया में कुछ गड़बड़ है। ये सब हो सके तो उससे ही कहलवाना। और किसी को इसका अनुमान न लगने दें तुम तरानिया में क्यों हो। लगभग सारे तरानियावासी जोरो के वफादार हैं। वे उसके पिता का बहुत आदर और सम्मान करते थे, उनकी मृत्यु आठ वर्ष पूर्व शिकार खेलते हुए एक दुर्घटना में हुई थी और ड्यूक स्टीफन उन्हें अधिक पसन्द नहीं है। परन्तु उन्हें यदि ये पता चल गया कि तुम जासूसी कर रहे हो, चाहे उनकी भलाई के लिये ही क्यों न हो वे बहुत ऊधम करेंगे। इसलिये आँख, कान खुले रखना परन्तु मुँह बन्द रखना।

"समझ आ गया ? अच्छा लड़को चलो। अब इस बात को सब को बताते हैं।"

चाँदी की मकड़ी—

तरानिया में ! श्याम पत्थर की बालकनी पर खड़ा डैन्जो के प्राचीन शहर के घरों की छतों को देख रहा था। सुबह की सुनहरी धूप में शहर
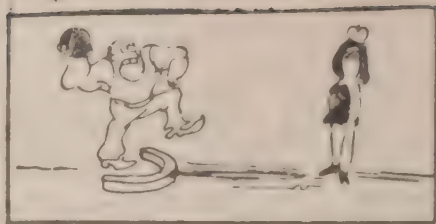
सुन्दर हिलते पेड़ों तथा बड़ी-बड़ी इमारतों की मीनारों से सज़ा हुआ दिखाई दे रहा था। आधी मील की दूरी पर एक छोटी पहाड़ी पर बने चर्च का सुनहरी गुम्बद दिखाई दे रहा था। नीचे पत्थरों से बने सहन में सफ़ाई करने वाली औरतें बाल्टियां लिये पत्थरों की सफ़ाई कर रही थीं।

पाँच मंजिल ऊँचे पत्थर से बने महल के पीछे चौड़ी तथा तेज़ बहती डैन्जो नदी शहर में से जा रही थी। छोटी-छोटी सैर करने वाली नौकाएं नदी में धीरे-धीरे तैर रही थीं। ये एक बहुत ही मनोहर दृश्य था जिसे अपने तीसरी मंजिल के कोने के कमरे से श्याम भली भाँति देख रहा था।

शेष आगामी अंक में
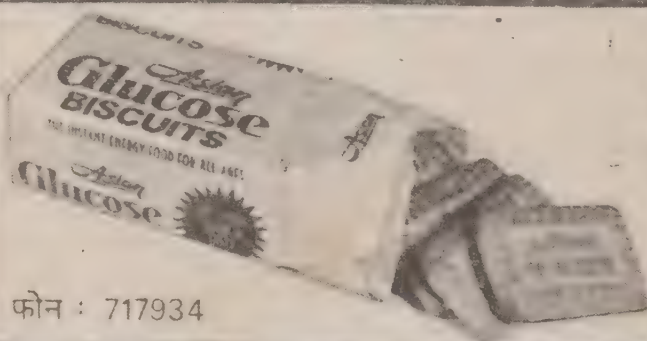
फैण्टम - और जनरल बाबाबू

दो रहस्यमय गोलियों की आवाज़—
बैंग बैंग !

मेजर . . . देखो बाहर बालकनी पर कौन है ?
कोई भी मनुष्य इस प्रकार गोली नहीं चला सकता . . . एक राक्षस !
लेफ्टीनेन्ट बालकनी पर देखो !

लेफ्टीनेन्टरामोसतुमनेसुनाजनरलनेक्याकहा, बालकनी पर ज़ाओ और बन्दूक वाले आदमी को पकड़ लो।
मैं तुमसे अब कोई आदेश नहीं लूँगा, मेजर

जाओ, नहीं तो मैं तुम्हारा सिर उड़ा दूँगा !

लेफ्टीनेन्ट रामोस आगे बढ़ते जाओ, देखो बाल-कनी पर कौन है ?

यहाँ कोई नहीं है !

आह ! !
तुमने बहुत अच्छी तरह नहीं देखा !

लेफ्टीनेन्ट रामोस . . . ?
क्या . . उसे क्या हुआ ?
हो सकता है वह बेहोश हो गया हो . . .

या फिर बालकनी पर उसे कुछ लग गया हो ! मेजर जा कर पता करो ?
आह ! अच्छा जनरल !

कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा . . . वहाँ कुछ नहीं है !
वहाँ बाहर जाओ !
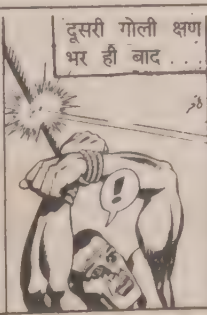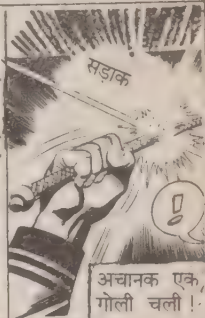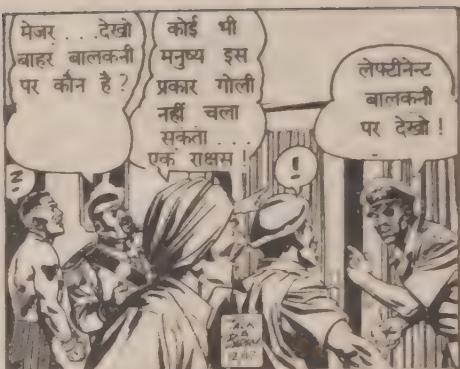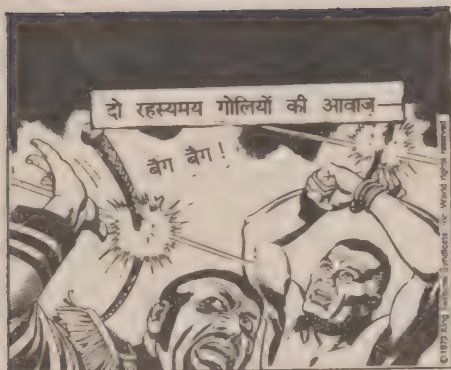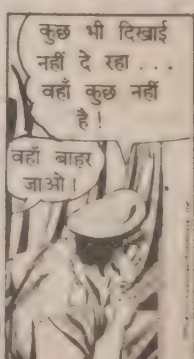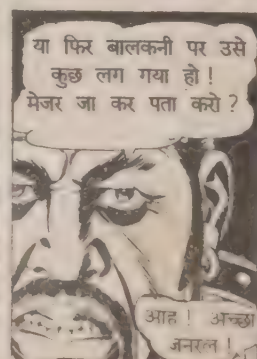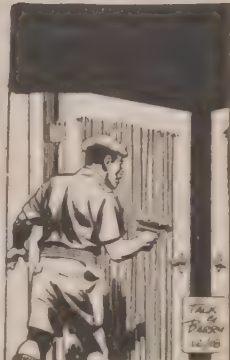
डिस्को आंधी

नाजिया हसन के डिस्को गीतों के एलबम की धुंआंधार सफलता ने संगीत की दुनिया को एक नये मोड़ पर ला खड़ा किया है अब तक हिन्दी पॉप म्यूजिक फिल्मी गीत ही होते थे लेकिन अब लगता है कि गैर फिल्मी डिस्को गीत फिल्मी गीतों को जबरदस्त चुनौती देंगे इसका एक पहलू और भी है बीट या डिस्को म्यूजिक अंग्रेजी में होने के कारण डिस्को का नशा सम्पन्न अंग्रेजी के वर्ग तक ही सीमित था लेकिन हिन्दी में डिस्को गीतों के प्रवेश ने यह घेरेबंदी तोड़ दी है और डिस्को की आंधी की चपेट में पनवाड़ी राम भरोसे और हलवाई नत्थू भी आ गये हैं। डिस्को आंधी के कुछ दीवाने परिणाम जो आम जनजीवन पर पड़ेंगे—जरा मुलाहिज़ा फरमाइये।
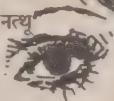
भिखारियों का बड़ा नुकसान होगा। डिस्को धुनों पर गाने गा कर वे भीख मांगेंगे। डिस्को लहर में उनके हाथ व सिर झटके खायेंगे और कटोरे से भीख में मिले सिक्के उछल कर इधर-उधर जा गिरेंगे।

लोकप्रिय फिल्मी धुनों पर भजन गाना हमारे भक्तों की पुरानी आदत है। अब जै माता के रात्रि जागरणों में डिस्को धुनों पर माता की आरती उतारी जायेगी। माता जागरण वास्तव में माता डिस्को नाइट के रूप में होंगे अब ! युवा लोग जागरणों में अधिक भाग लेंगे।

हो सकता है बाबा व पंडित जी भी मंत्र डिस्को अंदाज में पढ़ें ताकि हाथ से फिसलती युवा पीढ़ी पुनः उनके गिरफ्त में आये।

कच्चे मकानों में डिस्को संगीत का यंह प्र
होगा। दीवारें कुछ समय बाद भरभरा कर गिर जायेंगी। दीवारों में पड़ी दरारों से पता लग जाया करेगा कि किस मकान में डिस्को दीवाने रहते हैं।
अतः मकान मालिक से झगड़े आये दिन की बात होगी।
निर्धन वर्ग के कुछ घर ऐसे भी हैं जहां पक्के फर्श का रिवाज़ अब तक नहीं चला है। जमीन को गोबर मिट्टी से लीप कर फर्श का काम लिया जाता है। वहां हर डिस्को सैशन के बाद फर्श की हालत ऐसे ही होगी जैसे हल चलाने के बाद खेत की होती है। ऐसे घरों की गृहणियों के बाल जल्द सफेद हो जायेंगे।
शायद नये डिजाइन के नाम रखने की परम्परा भी चले
मुन्ने का नाम डिस्को राम ठीक रहेगा
डिस्को कुमार ज्यादा मॉड रहेगा
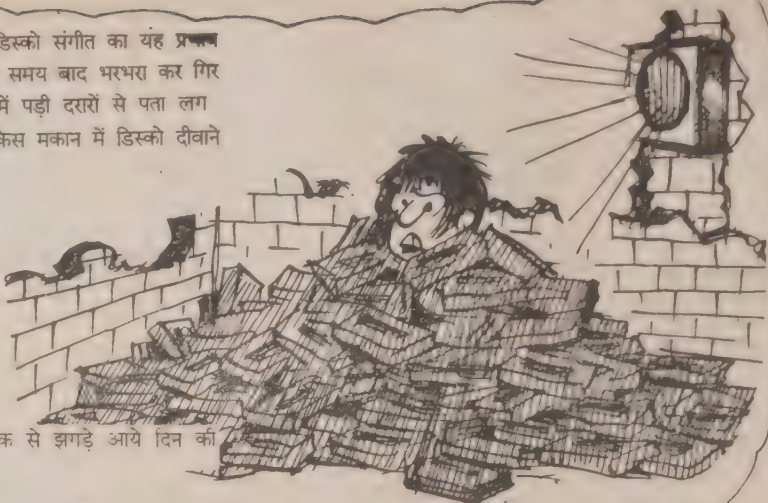
कहो सुरेश, ऊऽऽऽऽ क्या हाल है ...क्या हाल है.
डिस्को रोग से ग्रसित लोगों का मिलना जुलना भी डिस्को शैली में होगा।
ठीक है, आऽऽऽह ठीक है आऽऽऽऽह लकी लकी बेबी
पनवाड़ी डिस्को धुनों पर झूमते हुये पान लगायेंगे। पान में कितना चूना पड़ेगा कितना कत्था यह डिस्को धुन पर निर्भर करेगा जो उस समय बज रहा होगा।
डिस्को म्यूजिक एयर कंडीशन ड्राइंग रूमों से निकल कर पंखे वाले कमरों या खस की टट्टियों वाले मकानों तक आ गया है। जहां डिस्को लय पर झूमने पर कपड़े पसीने से तरबतर हो जाया करेंगे। गर्ज यह कि निम्न व निम्न मध्य वर्ग के युवाओं के कपड़ों का खर्च ज्यादा आयेगा.
अब शादियों में बारातों को दुल्हिन के घर पहुंचने में पहले से दुगना टायम लगा करेगा क्योंकि डिस्को धुनों पर लोग ज्यादा डांस करेंगे। बारात में डिस्को प्रेमियों का बहुमत हो जाये तो बारात पहुंचेगी ही नहीं। नया मुहूर्त निकालना पड़ेगा।

नीचे की मंजिल पर रहने वालों की किस्मत में नंगे सिर रहना नसीब नहीं होगा। ऊपर के डिस्को उछलकूद के कारण सीलिंग से कुछ न कुछ गिर कर सिर पर पड़ता ही रहेगा।
यह नयी टोपी कब ली तुमने ?
डिस्को गीत सुनते हुये सारा शरीर अपने आप झूमने लगता है। अब फर्नीचर की खैर नहीं है। स्टील की कुर्सियों की चूलें इतनी जल्दी ढीली हो जायेंगी जितनी जल्दी मलेरिया के बुखार में जोड़ ढीले होते हैं।
अब काफी हाऊसों या घरों में अमिताभ टॉप पर है या धमेन्द्र की जगह बहस का विषय होगा कौन सा ग्रुप टॉप पर है।
हिह ! भोंपू ग्रुप क्या खाकर कान फोड़ ग्रुप का मुकाबला करेगा ?
मैं कहता हूं भौपूं चोटी पर है।

बकरी

.हिन्दी डिस्को गीतों के भी अंग्रेज़ी स्टायल में नये-नये ग्रुप बनेंगे जैसे अंग्रेजी के बोनी एम व आबा आदि दो तीन दीवाने एक हो गये और शुरू कर दिया नया हिन्दी पॉप ग्रुप जैसे बबलू, कमला व रीता ने एक ग्रुप बनाया और अपने नामों के पहले अक्षर ले अपनी टोली का नाम बकरी रख दिया।

RADIO CYLON

रेडियो सीलोन से आमीन सायानी बिनाका गीत-माला की जगह डिस्को गीत माला प्रस्तुत करेंगे।

हां तो भाइयों और बहनों, तैयार हो जाइये तीसरी पायदान का गीत सुनने के लिये . . . .गीत के बोल हैं "तू भी कानी मैं भी काना, एक थाली में हमारा खाना।"

इस सब झमेले में दयनीय हालत आलइंडिया रेडियो की है। आल इंडिया रेडियो वाले नाक की सीध में चलना जानते हैं। याद है आपको डाक्टर केसकर का वह जमाना जब आल इंडिया रेडियो फिल्मी संगीत नहीं सुनाता था? इनके पास संगीत के खाने बने हैं जैसे फिल्मी संगीत, गजल, गीत, कव्वाली या भक्ति संगीत। डिस्को का कोई खाना नहीं है। रेडियो गैर फिल्मी डिस्को गीत अपने प्रोग्रामों में नहीं सुनायेगा क्योंकि इसके लिये उनके पास खाना ही नहीं है। यह कई वर्ष डिस्को एलबमों पर ऐसे ही बैठे रहेंगे जैसे मुर्गी अंडों पर — — — — — —

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

घनश्याम पी. आसुदानी, महात्मा गांधी स्कूल, जरीफखाना नागपुर, २३ वर्ष

लईक अहमद खान, एस. एन. शाह कम्पाउन्ड पठानवाड़ी मालाड, बंबई-६४, १८ वर्ष

चित्रराज पाण्डे 'दुखि'', चन्द्र बिनायक कास्ट उद्योग चाबहिल मेतिचोक काठमाण्डो नेपाल

सुरेश कुमार अग्रवाल, ६/१५ न्यू रोड, काठमाण्डो नेपाल, ३० वर्ष, पत्र-मित्रता।

अरुन प्रसाद, ए/६०, सेक्टर-१६, राउरकेला (उड़ीसा) १६ वर्ष, मित्रता करना, चेस खेलना

जितेन्द्र कुमार, म. न. १११, मो. बड़ा दरबार, अमरोहा-२४४२२१ २० वर्ष, पर्यटन, पत्रमित्रता।

ईश्वर चन्द्र सर्राफ C/O सहदेव राम लालजी प्रसाद सर्राफ चौक आजमगढ़-२७६००१; ३२ वर्ष

राकेश कुमार भटनागर, ईस्ट रोहताश नगर (शाहदरा), म. न. १२०२ सेठी बिल्डिंग, १४ वर्ष

चेतन कुमार जैन, ३/१४ खजाना गली, अजमेर (राज.), २० वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्में देखना।

हरी शंकर प्रसाद, सुरज जर्दा (गया), १८ वर्ष, मित्रता, गीत गाना, दीवाना पढ़ना।

एस. एम. वसीम, २१९/४५ पाटानाला लखनऊ-३ (उ०प्र०) २१ वर्ष, पेन फ्रेन्ड्स

मोहन जज्ञासी, द्वारा उमेश ज्ञानचदानी, बिलासपुर (म.प्र.) १ वर्ष, पत्र-मित्रता

श्याम सुंदर नत्थानी, चकर भाटा कैम्प, बिलासपुर (म.प्र.), २२ वर्ष, अधेड़ औरतों से मित्रता.

विनोद कुमार सिंह, १, एस. एन वनर्जीरोड़, मनिरामपुर, ब्यैरकपुर २४ परगना, (पश्चिम बंगाल)
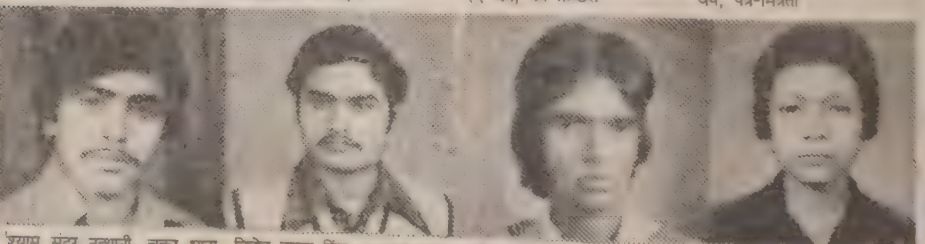
मर्सरत हुसैन, १८-जौहरी मोहल्ला लखनऊ-३ ,२१ वर्ष, सिनेमा, लड़कियों से दोस्ती करना।

पुष्पराम मानन्धर, अटको नारायण स्थान ५/७१३ काठमान्डो, नेपाल १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

जगदीश एन. मोटवानी, १८/४१७ नेहरू नगर, कुर्ला (पूर्व), बंबई-४०००३४. १४ वर्ष

गिरी राज सरवरी, १२४०, रानी बाग दिल्ली - ११००३४, २२ वर्ष, पत्र मित्रता

उमा शंकर प्रसाद, चांद चौरा, गया - ८२३००१, २० वर्ष, मित्रता, बहन बनाना.

संजय कुमार जैन, १/१११९ रेलवे रोड शाहदरा दिल्ली - ३२, १८ वर्ष, गाने सुनना

ललित निहलानी १२८, सिविल लाइन, कोल - २, ८ वर्ष, गाने सुनना, नाचना, क्रिकेट खेलना।

रन्जीत सिंह सलूजा, भारत टेन्ट हाउस, मेन रोड बिलासपुर (म०प्र०), १९ वर्ष

विक्रम सिंह सिसोदिया, ४९१/२४, केसरगंज अजमेर - ३०५००१, २० वर्ष, पत्र-मित्रता.

संजय कुमार जैन, १५६, मौहल्ला गुडयार्ड शाहदरा दिल्ली, १८ वर्ष, पत्र-मित्र बनाना

शमिम अहमद 'शमीम', एच- ६३८ सेक्टर-१५, राउरकेला. २० वर्ष, पत्र मित्रता

जय भगवान भारद्वाज, ३०९ जयपुर रोड़ रिवाड़ी १२३४०१, १७ वर्ष, दीवाना

वी वेंकटेश्वर राव, खिलघनरा ५०९३८०, आं०प्र०, २४ वर्ष, शास्त्रीय संगीत (हिन्दुस्तानी)।

राकेश, चौधरी, १०१४/% टैगोर नगर सिवल लाईन्ज लुधियाना, १९ वर्ष, वैडमिंटन, पत्र मित्रता

प्रदीप कुमार, २६०एम राम नगर गाजियाबाद (U.P.), १९ वर्ष, कार्टुन बनाना, एक्टिंग करना

बीरिशचन्द्र सिन्हा, ममता भवन, श्रीकृष्णपुरी, पटना (बिहार), ३० वर्ष, लेखन, भ्रमण, पत्र मित्रता

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ साफ लिखें।

नाम ....

....

पता ....

....

आयु .... शौक ....

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

वर्ग पहेली

10 रूइनाम

अन्तिम तिथि-२७-६-८१

संकेत

बांये से दांये

१. टेस्ट ट्यूब के आगे गाड़ी खड़ी करने की वज़ह? (३)
३. इसे लगाने पर धुंआ अन्दर जायेगा! (२)
५. इस बर्तन के उल्टा होने पर अफसोस होता है? (२)
६. इस से थप्पड़ मारने पर आवाज़ होती है। (३)
७. यह व्यक्ति कहते हैं इकतारा लेकर जगह-जगह घूमता है! पहले औरत था लेकिन दशक के आरम्भ होते - २ ही पुरुष बना। (३)
९. यह करना ठीक नहीं है। (३,२)
१३. ऐसा अपनी ओर खींचना दूसरों को मजबूर करता है। (४)
१४. इसे करना शुरुआत है। (३)
१५. एक डंडे के आगे रंग लगाने पर सौदा लिया जा सकता है। (२)

ऊपर से नीचे

१. बेकार रहने की इच्छा? (३)
२. धोखा मत खाइये। इन नसों से वाकिफ हो जाइये। (२-२)
३. इसका सामना होने पर जीतना आसान नहीं है। (२,४
४. ताश काटने में सन्देह? (२)
८. इसके साथ जाने पर न कोई अकेला होता है न कमज़ोर! (२-२)
१०. बिस्तर सूखा नहीं है? (२)
११. गुलाम सलामत अली की समस्या? ३)
१२. यह ढ़ोलक पर दिया जा सकता है। (२)

अंक नं० ८ में प्रकाशित चित्र वर्ग पहेली का हल
सिर पर
विजेता:- कुक्कू बिन्द्रा
५६, विरेन्द्र नगर जेल रोड,
नई दिल्ली-110018

ऋषिकपूर :

दीवाना

छायाकार : जयन्तदास

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275